



आवासन और शहरी
कार्य मंत्रालय
भारत सरकार



जीवनशैली में संरक्षण : भारतीय विरासत

(आठवाँ क्षेत्रीय 3 आर फोरम के अवसर पर प्रकाशित)



आवासन और शहरी कार्य मंत्रालय
भारत सरकार

2018

प्राक्कथन

श्री दुर्गा शंकर मिश्रा

सचिव,

आवासन और शहरी कार्य मंत्रालय, भारत सरकार

प्रथम खण्ड

लेखक और संकलनकर्ता

डॉ. विजय शंकर द्विवेदी

सहायक आचार्य

संस्कृत विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय

ईमेल: vs.vinamra@gmail.com

द्वितीय खण्ड

रेखाचित्रण

श्री शेखर गुरेरा, कार्टूनिस्ट

वेबसाइट: www.shekhargurera.com



Ministry of Housing
and Urban Affairs
Government of India



Conservation In Lifestyle : Indian Heritage

(Published on the occasion of Eighth Regional 3R Forum)



Ministry of Housing & Urban Affairs
Government of India

2018

Foreword

Mr. Durga Shanker Mishra

Secretary

Ministry of Housing & Urban Affairs, Govt. of India

Part 1

Written and compiled by

Dr. Vijay Shankar Dwivedi

Assistant Professor,

Department of Sanskrit, University of Delhi

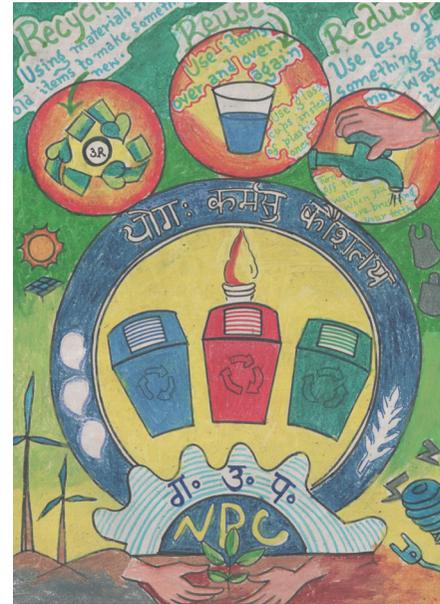
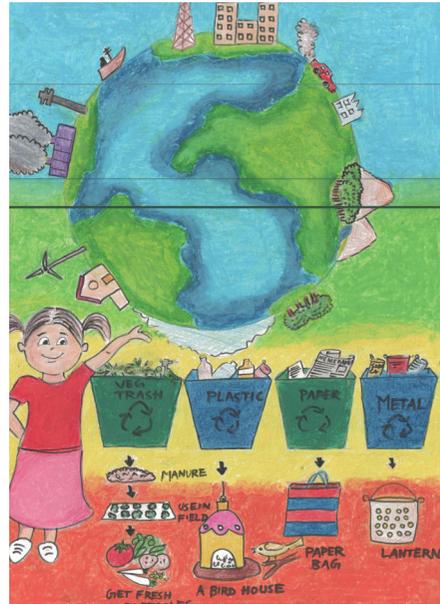
Email: vs.vinamra@gmail.com

Part 2

Illustrations by

Mr. Shekhar Gurera, Cartoonist

Website: www.shekhargurera.com





Durga Shanker Mishra
Secretary
Ministry of Housing &
Urban Affairs
Govt. of India

Foreword

Indian civilization is one of the ancient civilizations of the world. Thousands of years ago, our sages created Vedas, Purana, Upanishad, Shastra (scriptures), History, Aranyak, etc., in which various aspects of human life were seen imbibing nature. In subsequent literature and sacred scriptures, Indian lifestyle has been woven into different forms adopting nature in their day to day life. In this book, Dr Vijay Shankar Dwivedi, Assistant Professor, Department of Sanskrit, University of Delhi has highlighted more aspects.

If we look carefully around us, in our rural life nothing is useless. Everything is complementary to each other, and each commodity is used extensively. In fact, we get to see in real life that waste is wealth. There are so many examples. Whether it is a fabric we use in different forms at different times or consume animals' waste / any other refuse to increase the fertility of our agriculture farms.

Indian lifestyle is against wastages. Managing our daily chores with minimum resources is especially inherent in our lifestyle, because we have always considered it as our sacred duty to preserve nature. That is why, nature was worshipped in the first adage of our ancient sacred Rigveda – there is a description and resolve to protect the five basic elements of nature contained in these mantras.

Recently, Honourable Prime Minister mentioned the Rejoice' through 'Reduce, Reuse, Recycle, and Redesign, Remanufacture and Recover' in his speech. In fact, this is the legacy of our country's century old heritage. However, we are gradually going away from this legacy in a race of modernization. Once again, through our persistent efforts under Swachh Bharat Mission, we are trying to go back to all cherished heritage of preservation and conservation and this is now visible everywhere all around us.





दुर्गा शंकर मिश्रा

सचिव

आवासन एवं शहरी कार्य

मंत्रालय,

भारत सरकार

प्राक्कथन

भारतीय सभ्यता विश्व की प्राचीनतम सभ्यताओं में से एक है। हजारों वर्ष पूर्व हमारे ऋषियों ने वेद, वेदांग, पुराण, उपनिषद्, शास्त्र, इतिहास, आरण्यक आदि की रचना की, जिनमें मानवीय जीवन को प्रकृति के साथ आत्मसात् करते हुए विभिन्न पहलुओं को देखा गया। परवर्ती साहित्य एवं ग्रन्थावलियों में भी भारतीय जीवनशैली, प्रकृति को अंगीकार करते हुए भिन्न-भिन्न रूपों में प्रदर्शित की गयी है। इस पुस्तिका में डॉ. विजय शंकर द्विवेदी, सहायक आचार्य, संस्कृत विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय ने इसी पहलू को उजागर किया है।

अगर हम देखें तो हमारे ग्रामीण जीवन में कोई भी वस्तु बेकार नहीं होती है। हर वस्तु एक दूसरे की संपूरक होती है एवं एक-एक वस्तु का भरपूर उपयोग किया जाता है। सच में, अपशिष्ट धन है (Waste is Wealth) हमें यही देखने को मिलता है। चाहे कपड़े को विभिन्न रूपों में अलग-अलग समय में प्रयोग करना हो, पशु अपशिष्ट का उपयोग करना हो या अन्य कोई भी कचरा हो उससे कैसे खेतों की ऊर्जा बढ़ाने में प्रयोग कर सकते हैं इसकी मिसाल देखने को मिलती है।

भारतीय जीवनशैली अपव्यय के विरुद्ध है। कम में ही काम चला लेना या अपनी आवश्यकताओं को कम करना भारतीय जीवनशैली की विशेषता है। किसी एक वस्तु को किस-किस प्रकार प्रयोग कर सकते हैं, कितनी बार उपयोग कर सकते हैं, यह भी पूरी तरह हमारी जीवन पद्धति में निहित है। यह इसलिए है क्योंकि हमने हमेशा प्रकृति का संरक्षण करना अपना पुनीत कर्तव्य समझा है। तभी तो प्राचीनतम वेद ऋग्वेद के प्रथम सूक्त में अग्निदेव से कल्याण करने की प्रार्थना की गई है – समस्त पंच तत्त्वों के वर्णन के साथ उनके संरक्षण का संकल्प भी वेद मंत्रों में निहित है।

हाल ही में, माननीय प्रधानमंत्री जी ने अपने उद्बोधन में Reduce (लघुकरण), Reuse (पुनर्प्रयोग), Recycle (पुनर्चक्रीकरण), Redesign (पुनर्रचना), Remanufacture (पुनर्निर्माण) एवं Recover (पुनर्प्राप्ति) के द्वारा Rejoice (आनन्दानुभूति) का उल्लेख किया था। सच में यही हमारे देश की सदियों से चली आ रही विरासत है। यह दूसरी बात है कि आधुनिकीकरण के साथ हम इस विरासत से धीरे-धीरे दूर होते चले गए। जिसे फिर से स्वच्छ भारत मिशन के माध्यम से वापस लाने का एक सार्थक प्रयास पूरे देश में चल रहा है एवं चहुँ ओर इसका प्रभाव भी दिख रहा है।



I am happy to know that “Eighth 3R (Reduce, Recycle, Reuse) Forum” is being organized with the cooperation of Madhya Pradesh State Government and Government of India under the auspices of United Nations Regional Development Centre (UNCRD) between 9th-12th April, 2018 in beautiful city of Indore, which was awarded first position in the country in a Swachh Survekshan (clean city survey) in the year 2017. In this forum, Scholars, Mayors, Officials from Municipal Corporation and Entrepreneurs connected with 3R related industries are going to participate from 45 countries. On this occasion, a handbook written and compiled by Dr. Dwivedi titled “ Conservation In Lifestyle: Indian Heritage” is an important and useful handbook which will be helpful in conveying this message to everyone.

In the last chapter of this booklet, Mr. Shekhar Gurera, a cartoonist has depicted various dimensions of Indian lifestyle in a very effective manner through illustrations. Mr. Gurera has briefly described the related aspects of lifestyle along with each illustration. I would like to thank both Mr. Dwivedi and Mr. Gurera for their invaluable contribution.

I hope that, through this handbook, message of nature conservation in Indian lifestyle will be conveyed properly to all participants in 3R Forum from the country and abroad and through them it will move forward to usher in new harmony and cleanliness amongst all people to attain utmost joy while encouraging Reduce, Reuse, Recycle, Recover, Redesign, Remanufacture. My best wishes to all !

Date: 09.04.2018

(Durga Shanker Mishra)
Secretary
Ministry of Housing & Urban Affairs
Govt. of India



मुझे खुशी है कि वर्ष 2017 के स्वच्छ सर्वेक्षण में पूरे देश में प्रथम स्थान प्राप्त करने वाले खूबसूरत शहर इंदौर में संयुक्त राष्ट्र संघ क्षेत्रीय विकास केन्द्र (UNCRD) के तत्वावधान में मध्यप्रदेश राज्य सरकार एवं भारत सरकार के सहयोग से 9-12 अप्रैल, 2018 के बीच 8वां 3R (Reduce, Recycle, Reuse) फोरम का आयोजन किया जा रहा है। इसमें कुल 45 देशों से विशिष्ट महानुभाव, विद्वज्जन, महापौर एवं संबंधित उद्योग से जुड़े उद्यमी एवं नगर निकायों के अधिकारी भाग ले रहे हैं। इस अवसर पर डॉ. द्विवेदी द्वारा तैयार की गयी "जीवनशैली में संरक्षण : भारतीय विरासत" एक महत्वपूर्ण एवं उपयोगी पुस्तिका है जो इस संदेश को जन-जन तक पहुँचाने में सहायक सिद्ध होगी।

इस पुस्तिका के अंतिम अध्याय में श्री शेखर गुरेरा, कार्टूनिस्ट द्वारा भारतीय जीवनशैली के विभिन्न उपयोगों को कार्टून के माध्यम से बहुत ही प्रभावी तरीके से दर्शाया गया है। हर कार्टून के साथ श्री गुरेरा द्वारा संक्षेप में जीवन से संबंधित पहलुओं को वर्णित किया गया है। इन दोनों के कार्यों के लिए मैं डॉ. द्विवेदी जी एवं श्री गुरेरा जी को साधुवाद देता हूँ।

मुझे आशा है कि इस पुस्तिका के माध्यम से देश-विदेश के 3R फोरम में भाग ले रहे प्रतिभागियों एवं उनके माध्यम से समस्त लोगों तक भारतीय जीवनशैली में स्वाभाविक रूप से अन्तर्निहित प्रकृति-संरक्षण का सन्देश सही रूप से पहुँचेगा। और नई समरसता एवं स्वच्छता को आगे बढ़ायेगा तथा Reduce, Reuse, Recycle, Recover, Redesign, Remanufacture को प्रोत्साहित करते हुए सभी को आनन्द की प्राप्ति करायेगा। मेरी शुभकामनाएं।

दिनांक: 09.04.2018



(दुर्गा शंकर मिश्रा)

सचिव

आवासन एवं शहरी कार्य मंत्रालय,

भारत सरकार





Table of Contents

Foreword

Part 1: Conservation In Lifestyle : Indian Heritage 2

1. Creation	4
2. Conservation of Water	26
3. Protection of Air	44
4. Protection of Earth	60
5. Environment Protect in Indian Tradition	76



आवासन और शहरी
कार्य मंत्रालय
भारत सरकार



विषय-सूची

प्राक्कथन

प्रथम खण्ड: जीवनशैली में संरक्षण : भारतीय विरासत

3

1. सृष्टि

5

2. जल-संरक्षण

27

3. वायु-संरक्षण

45

4. भूमि-संरक्षण

61

5. भारतीय परम्परा में पर्यावरण संरक्षण

77



Part 2: Conservation in Indian Living Demonstrated through Illustration 108

1. Mera Ghar (My House)	110
2. All round use of Coconut (Our Kalpataru)	112
3. Use of food waste, cowdung and biomass	114
4. Eco-consumerism in Lord Buddha's life	118
5. Reuse of Old Clothes	120
6. Meri Chakki (My Grinding Mill)	124
7. Reuse of Toys	126
8. Reuse of Tyres	128
9. Rock Garden in Chandigarh	130
10. Biogas from Food waste	134



आवासन और शहरी
कार्य मंत्रालय
भारत सरकार



द्वितीय खण्ड: भारतीय जीवन में संरक्षण : चित्रों के माध्यम से प्रदर्शन	109
1. मेरा घर	111
2. नारियल (हमारा कल्पतरु) – का उपयोग	113
3. भोजन अपशिष्ट, गाय के गोबर और जैव ईंधन का प्रयोग	115
4. गौतम बुद्ध के जीवन में पर्यावरण–उपभोक्तावाद	119
5. पुराने कपड़ों का पुनः प्रयोग	121
6. मेरी चक्की	125
7. खिलौनों का पुनः प्रयोग	127
8. टायर का पुनः प्रयोग	129
9. चंडीगढ़ का रॉक उद्यान (गार्डन)	131
10. भोजन अपशिष्ट से निर्मित जैव ईंधन (बायोगैस)	135

Part 1

Conservation In Lifestyle : Indian Heritage

प्रथम खण्ड

**जीवनशैली में संरक्षण :
भारतीय विरासत**



Ministry of Housing
and Urban Affairs
Government of India



Chapter 1 Creation





आवासन और शहरी
कार्य मंत्रालय
भारत सरकार



अध्याय 1

सृष्टि





Chapter 1 Creation

The creation and origin of the vast and diverse universe has evoked the fascination and curiosity of mankind for ages. Who crafted this wonderful creation, why was it made, what is its nature, what are the five elements, what is creation, what is the world, what is human, what is life, what is the basis of life, body is made of which elements and is based on which elements? Questions about the utility of five elements such as earth, water, light, air and sky for life and the human obligation towards them and their optimum consumption and use has being raised time and again from very ancient times. Descriptions regarding the creation of creation has been passed on from the R̥gveda to other scriptures like Yajurveda, Atharvaveda, Brahmins, Aranyako, Upanishads, Vedangs, Puranas, Sankhya, Vedanta, Shastras and the Epics. The later literature also delves into the creation of the universe. The origin of the universe is a mystery in itself. Many philosophical hymnology are obtained in the R̥gveda regarding this. The description of the early stage of creation is obtained in the 'naasdeeya' hymnology. There was nothing at that time.





अध्याय 1 सृष्टि

विविधताओं से युक्त इस सृष्टि के विषय में मानव की जिज्ञासा सर्वदा से ही दृष्टिगोचर होती है। अद्भुत सृष्टि को किसने बनाया, किससे बनाया, क्यों बनाया, प्रकृति क्या है, पंचतत्त्व क्या हैं, जीव क्या है, जगत् क्या है, मानव क्या है, जीवन क्या है, जीवन का आधार क्या है, शरीर किन तत्त्वों से बना है एवं किन तत्त्वों पर आधारित है। जीवन के लिए पंच तत्त्व पृथ्वी, जल, तेज, वायु, आकाश की उपयोगिता क्या है और इन पंच तत्त्वों के प्रति मानव का क्या कर्तव्य है, एवं प्रकृति प्रदत्त समस्त भोग्य पदार्थ मानव को किस भाव से ग्रहण करना चाहिए, किस भाव से उपयोग करना चाहिए आदि—आदि जानने की इच्छा प्राचीन काल से क्रान्तदर्शी मनीषियों में चली आ रही है। सृष्टि—उत्पत्ति के बारे में ऋग्वेद से लेकर अन्य संहिताओं यजुर्वेद, अथर्ववेद, ब्राह्मणों, आरण्यकों, उपनिषदों, पुराणों, सांख्य, वेदान्तादि शास्त्रों, महाकाव्यों एवं परवर्ती साहित्य आदि में भी सृष्टि विषयक वर्णन प्राप्त होता है। सृष्टि की उत्पत्ति अपने आप में एक रहस्य है। इसके सम्बन्ध में ऋग्वेद में कई दार्शनिक सूक्त प्राप्त होते हैं। नासदीय सूक्त में सृष्टि के प्रारम्भिक अवस्था का वर्णन प्राप्त होता है। उस समय कुछ भी नहीं था।





**Na mṛtyurāsīdamṛtaṃ na tarhi na rātryā ahna āsītpraketaḥ /
ānīdavātaṃ svadhayā tadekaṃ tasmāddhānyan na paraḥ kiṃ canāsa // Ṛgveda 10-129-2
tama āsīt tamasā ghūḷamaghre.apraketaṃ salilaṃ sarvamāidam / Ṛgveda 10-129-3**

There was neither death nor absence of death; and neither was there day nor night; neither symptomatic of day nor night Sun and Moon was there. There existed a cover of tama (ignorance) which was an indiscriminate water.

There was an 'element' which was breathing without air. The dark darkness was there. He was the 'One' who was the head of the creation (universe), he wanted to create the creation (universe) and he created the creation.

**Arvāgh devā asya visarjanenāthā ko veda yataābabhūva/ Ṛgveda 10-129-6
Iyaṃ viśṣṭiryata ābabhūva yadi vā dadhe yadi vā na/
yo asyādhyakṣaḥ parame vyoman so aṅgha veda yadi vā naveda // Ṛgveda 10-129-7**

Who can say he endue this particular kind of creation or not? Deities are also after the origin of creation. Its head dwells in the ultimate sky. Only he knows if he does not know then nobody knows.

In addition to this, description of the origin of creation is also found in the Purush Sukta of Ṛgveda, Hiranyagarbha Sukta, Vak Sukta, Asmaviya Sukta, etc.





In the Purush Sukta (Hymn) (Ginormous Purush, Aadi Purush) (Superman), origin Purush (man) etc. creation has been created by Aadi Purush . The whole world that is visible is a Purush world which is the entire creation.

**Etāvānasya mahimāto jyāyāṃśca pūruṣaḥ /
pādo.asyaviśvā bhūtāni tripādasyāmṛtaṃ divi // Ṛgveda 10.90.3**

That is the glory of a man (Purusha) and he is bigger than this. The entire creation is one-fourth of his. The rest of the three-fourth is ambrosial, which is located in heaven.



**Tasmādyajñātsarvahutaḥ saṃbhṛtaṃ pṛṣadājyam/ Paśūntānścakre
vāyavyānāraṇayāngrāmyāśca ye // Ṛgveda 10. 90. 8**

All creatures, animals, birds, knowledge and substances were originated from that omnipotent Yajña. Deities have performed mental Yajña (offered prayer) only for the supreme man.



**Candramā manaso jātaḥ cakṣoḥ sūryoḥ ajāyata /
mukhādindraścāghniśca prāṇād vāyurajāyata // Ṛgveda 10.90.13
Nābhyā āsīdantarikṣaṃ śīrṣṇo dyauḥ samavartata /
padbhyāṃ bhūmirdiśaḥ śrotrāt tathā lokānakalpayan // Ṛgveda 10.90.14**





आवासन और शहरी
कार्य मंत्रालय
भारत सरकार



पुरुषसूक्त में पुरुष (विराट् पुरुष, आदि पुरुष) से सम्पूर्ण सृष्टि की उत्पत्ति बतायी गई है। सम्पूर्ण दृश्यमान जगत् पुरुष ही है जो सम्पूर्ण सृष्टि है।

एतावानस्य महिमातो ज्यायाँश्च पुरुषः ।
पादोऽस्य विश्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि । ऋग्वेद 10.90.3

इतनी पुरुष की महिमा है पुरुष तो इससे भी बड़ा है। इसके एक चतुर्थाश में सम्पूर्ण लोक हैं। बाकी तीन चौथाई अमृतमय है जो द्युलोक में स्थित है। यह सम्पूर्ण सृष्टि सर्वहुत मानसिक यज्ञ से उत्पन्न हुई है।

तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतः संभृतं पृषदाज्यम् ।
पशून्स्तौँश्चक्रे वायव्यानारण्यान्ग्राम्याँश्च ये । ऋग्वेद 10.90.8

उस सर्वहुत यज्ञ से सभी प्राणी, पशु-पक्षी, ज्ञान एवं पदार्थ उत्पन्न हुए। देवताओं ने पुरुष से ही मानसिक यज्ञ किया।

चन्द्रमा मनसो जातः चक्षोः सूर्यो अजायत ।
मुखादिन्द्रश्चाग्निश्च प्राणाद्वायुरजायत । ऋग्वेद 10.90.13
नाभ्या आसीदन्तरिक्षं शीष्णो द्यौः समवर्तत ।
पदभ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात् तथा लोकाँ अकल्पयन् । ऋग्वेद 10.90.14





The moon originated from the mind of that Virat Purush (Supreme Man); the sun originated from his eyes, Indra and Agni (Fire) from his mouth; and Pran (Life) from the air. Space originated from his navel, heaven from the head, earth from his legs and directions from his ears; and the creation was created in this way.

**Yathorṇanābhiḥ sṛjate gṛhṇate ca yathā pṛthivayāmoṣadhayaḥ saṁbhavati /
yathā sataḥ puruṣāt keśalomāni tathākṣarāt sambhavatīha viśvam // Mundokopaniṣad 1.1.8**

The way a spider weaves its net, then wind it up in itself, the way vegetation gets produced on the earth, in the same way, the universe is created from the alphabet Brahma and get absorbed in it, nothing remains. Similarly, objects get merged again into five elements. Similarly, the seeds of reuse can be seen in the creation itself. They originate from nature and then merge in it i.e. the seeds of Zero Waste can also be observed.

The seed of the 3-R concept (3-R refers to Reduce, Reuse and Recycle) can also be seen in the creation.

Reduce is about making small products from bigger products and using them again and again. Such as making a chair from an old door or making a small dress from a much bigger dress.





उस विराट् पुरुष के मन से चन्द्रमा उत्पन्न हुआ, नेत्रों से सूर्य उत्पन्न हुआ, मुख से इन्द्र और अग्नि, एवं प्राण से वायु उत्पन्न हुआ। नाभि से अन्तरिक्ष लोक, शिर से द्युलोक पैरो से पृथिवी तथा कानों से दिशाएँ उत्पन्न हुई इस प्रकार सृष्टि का निर्माण हुआ।

यथोर्णनाभिः सृजते गृह्णते च यथा पृथिव्यामोषधयः संभवति ।

यथा सतः पुरुषात् केशलोमानि तथाऽक्षरात् संभवतीह विश्वम् ।। मुण्डकोपनिषद् 1.1.8

जिस प्रकार मकड़ी अपना जाला बुनती है फिर अपने में ही समेट लेती है जिस प्रकार पृथिवी में वनस्पतियाँ उत्पन्न होती हैं उसी प्रकार अक्षरब्रह्म से जगत् की सृष्टि होती है और उसी में लीन हो जाती है, कुछ शेष नहीं रहता। उसी प्रकार वस्तुओं का पुनः पंचतत्त्व में विलय हो जाता है। इसी प्रकार सृष्टि में ही पूर्ण प्रयोग का भी बीज देखा जा सकता है। प्रकृति से ही उत्पन्न होकर उसी में विलीन हो जाना अर्थात् शून्य अपशिष्टता (जीरो वेस्टेज) का बीज भी अवलोकित हो रहा है। 3-आर की अवधारणा का बीज भी सृष्टि में देखा जा सकता है।

3-आर से तात्पर्य रिड्यूस (लघूकरण), रीयूज (पुनरुपयोग) तथा रीसाइकल (पुनश्चक्रण) है।

लघूकरण (रिड्यूस) में बड़े वस्तु आदि का छोटे वस्तु आदि बनाने में उपयोग करना यह लघूकरण (रिड्यूस) है। जैसे दरवाजे का बाद में कुर्सी बनाना, या बड़े कपड़े का छोटा कपड़ा बनाना आदि।





Reuse is to re-salvage any product once again. After consumption of a product using the modified form of the first utmost product for other tasks is reuse. Like after extracting juice from sugarcane its waste rind can be used for cooking the food, and when it is converted into ash, sprinkling that ash on vegetables like Brinjals etc. to protect them from pests. Gradually, that ash works as manure after mixing with the soil and this helps increase the yield. So, repeated use of other products is reuse.

Recycle is about converting any product or metal etc. again and again in its basic form of nature. Such as making various products like Jewellery, ornaments etc. from gold, silver etc. and its repeated use is called recycling.

Hence, the 3-R concept is visible as a seed form since the beginning of the creation. Sankhya philosophy considers 25 elements for the origin of creation.

**Prakṛtermahānstatō.ahaṁkārastasmādgaṇāśc ṣoḍāśakaḥ /
Tasmādapi ṣoḍāśakātpaṁcabhyaḥ paṁcabhūtāni // Isvar kṛṣṇa, sāṅkhyakārikā 22**





आवासन और शहरी
कार्य मंत्रालय
भारत सरकार



पुनरुपयोग (रीयूज) में किसी वस्तु का पुनरुपयोग करना है। प्रथम उपयोगपरान्त वस्तु के परिवर्तित रूप का पुनः अन्य कार्य के लिए उपयोग करना पुनरुपयोग (रीयूज) है। जैसे गन्ने का रस निकाला उसका अपशिष्ट छिलका आदि से भोजन बना लिया, भोजन बनाने के पश्चात् वह राख में परिवर्तित हो गया उस राख को बैंगनादि सब्जी के पौधों पर किटाणुओं से बचाने के लिए छिड़काव कर दिया, उस राख ने पौधों को कीटाणुओं से बचाया फिर वह राख धीरे-धीरे नीचे गिरकर खाद के रूप में परिणत हो गयी और पैदावार बढ़ाने के काम में आ गयी। इसी तरह अन्य वस्तुओं का भी बार-बार उपयोग करना पुनरुपयोग (रीयूज) है।

पुनश्चक्रण (रीसाइकल) किसी वस्तु या धातु आदि को बार-बार उसके मूल रूप में लाकर पुनः उसी वस्तु या अन्य वस्तु का निर्माण करना पुनश्चक्रण (रीसाइकल) है। जैसे सोना, चाँदी आदि धातुओं से आभूषण आदि वस्तुएँ बनाना, बार-बार इसी प्रकार उपयोग करना पुनश्चक्रण (रीसाइकल) कहलाता है।

सृष्टि के आरम्भ से ही 3-आर की अवधारणा कहीं न कहीं बीज रूप में दृष्टिगोचर होती है। सांख्य दर्शन 25 तत्त्वों से सृष्टि की उत्पत्ति मानता है।

प्रकृतेर्महांस्ततोऽहंकारस्तस्माद्गणश्च शोडशकः।

तस्मादपि षोडशकात्पंचम्यः पंचभूतानि।। ईश्वरकृष्ण, सांख्यकारिका 22





It has been said that origin of the creation was from a man (Purush) and nature. Mahata (Universe) element from Man and Nature, ego from Mahata, Eleven Senses and Five ‘Tanmatras’ from ego, and five great elements from five ‘tanmatras’. And five Mahabhuts (Supreme Elements) originated from these five ‘tanmatras’.

The 3-R concept can be considered as a part of nature. We can see the origin of creation in 3-R itself. If we look at the Sankhya philosophy, then Mahat (Universe) elements from Man and Nature – Ego from Mahat (Universe) element, From Ego to Eleven Senses and Five ‘Tanmatras, Five ‘Tanmatras to Panch Mahabhuts i.e. Earth, Water, Light, Air, Sky were originated. Thus, the deformity originated from nature and the same deformity is being reproduced again and again as nature. So, we can say that seeds of Reuse are visible in the origination of these Panch Mahabhuts i.e. five elements.

If we see in other forms too, rain is caused by clouds, Havish (Foodstuff) originated from water, Yajña happened from Havish (Foodstuff) and Clouds get strength from Yajña and then pour water through rain. Thus, it is recycling. The seeds of 3-R (Reduce, Reuse, Recycle) concept can be seen right from the beginning of creation.

Our entire life is dependent on the Panchbhuts (Five Elements) because whatever exists in the body is there in the universe too. From this point of view, the body is made up of all Panchbhuts (earth, water, fire, air and sky). Everything is present in the body. Hence, in the Indian tradition, the emphasis was on the worship of Panch Tatva (Five Elements) i.e. earth, water, fire, air and sky. They have been worshipped to get all kinds of wealth and welfare.





सृष्टि की उत्पत्ति पुरुष एवं प्रकृति से बतायी गयी है। पुरुष एवं प्रकृति से महत्त्व, महत्त्व से अहंकार, अहंकार से एकादश इन्द्रियाँ एवं पंच तन्मात्राएँ, पंच तन्मात्राओं से पंचमहाभूत की उत्पत्ति मानी गयी है।

3-आर की अवधारणा को प्रकृति का अंग मान सकते हैं। सृष्टि की उत्पत्ति में ही 3-आर देख सकते हैं। सांख्य दर्शन में देखें तो पुरुष और प्रकृति से महत्त्व, महत्त्व से अहंकार, अहंकार से एकादश इन्द्रियाँ एवं पंचतन्मात्राएँ पंच तन्मात्राओं से पंचमहाभूत यानी पृथ्वी, जल, तेज, वायु, आकाश की उत्पत्ति हुई। इस प्रकार प्रकृति से उत्पन्न विकृति हुआ और वह विकृति पुनः प्रकृति होकर पुनः दूसरे को उत्पन्न कर रही है। इस प्रकार कह सकते हैं कि पंचमहाभूत यानी पंचतत्त्व की उत्पत्ति में ही पुनरुपयोग (रीयूज) का बीज दृष्टिगोचर हो रहा है।

अन्य रूप में भी देखें तो पर्जन्य (बादल) से जल वृष्टि होता है जल से हविष् अन्नादि उत्पन्न होता है, हविष् से यज्ञ होते हैं और यज्ञ से बादल पुष्ट होता है और फिर जल वृष्टि करता है। इस प्रकार यह पुनश्चक्रण (रीसाइकल) की प्रक्रिया स्वयं सृष्टि में व्याप्त है। इस प्रकार 3-आर (रिड्यूस, रीयूज, रीसाइकल) की अवधारणा का बीज सृष्टि के प्रारम्भ से ही देख सकते हैं।

हमारा सम्पूर्ण जीवन ही पंच महाभूतों पर निर्भर है क्योंकि यत् पिण्डे तत् ब्रह्माण्डे जो हमारे पिण्ड यानी शरीर में है वही ब्रह्माण्ड में भी है। इस दृष्टि से शरीर समस्त पंच महाभूतों (पृथ्वी, जल, तेज, वायु, आकाश) से निर्मित है। शरीर में सबकी मात्रा विद्यमान है अतः भारतीय परम्परा में पंचतत्त्व (पृथ्वी, जल, तेज, वायु, आकाश) की उपासना की सर्वदा बात कही गयी है। इनसे समस्त प्रकार के ऐश्वर्य प्राप्त करने एवं कल्याण करने की प्रार्थना की गयी है।





Agni, Vayu and Suraj (Fire, Air and Sun) were given too much importance. Yask had considered only 3 key gods.

**‘Tisraḥ ev devatā’ iti nairuktāḥ-agniḥ pṛthivīsthānaḥ.,vāyurvā vā.antarikṣasthānaḥ, / Nirukta
7.2.1**

Fire is located on earth, air is located in space and sun is located in heaven. Other deities are their forms, which are known by different names due to the difference in time and work. They are the sources of our life.

**Sthūl bhūtāni tu pañcīkṛtāni / Vedāntasār
Dvidhā vidhāya caikaikaṃ caturdhā prathamam punaḥ sva-svaitar dvitīyāṃśaiḥ yojanāt
pañca pañca te / Pañcadaśī 1. 27**

Five elements are also integrated with each other. Everyone has a part of each one. It has half of its own part and one-eighth of other’s part. The way Panchabhuts are integrated is in the same way our physical body is integrated with these five elements. This body is constituent of five elements. From this point of view too this body requires all of these elements.

The way five elements are integrated. Connected to each other and affected with all. The same way Reduce, Reuse, Recycle is also connected with each other. All these three activities are inherent in one activity.





अग्नि वायु और सूर्य का भी बहुत महत्त्व बताया गया है। यास्क ने तीन ही मुख्यदेवता माना है।

‘तिस्रः एव देवता’ इति नैरुक्ताः— अग्निः पृथिवीस्थानः, वायुर्वा इन्द्रो वाऽन्तरिक्षस्थानः, सूर्यो
द्युस्थानः। निरुक्त 7.2.1

पृथ्वी स्थानी अग्नि, अन्तरिक्ष स्थानी वायु एवं द्युस्थानी सूर्य। अन्य देवता इन्हीं के स्वरूप हैं जो काल भेद, कार्य भेद एवं विशेषता के कारण अलग-अलग नामों से जाने जाते हैं। ये जीवन के स्रोत हैं।

स्थूलभूतानि तु पंचीकृतानि। वेदान्तसार

द्विधा विधाय चैकैकं चतुर्धा प्रथमं पुनः स्व-स्वेतर द्वितीयांशैः योजनात् पंच पंच ते। पंचदशी 1.27

पंचतत्त्वों का आपस में पंचीकरण भी है। सबमें सबका अंश है। अपना आधा अंश है एवं अन्य का अष्टांश है। जिस प्रकार पंचभूतों का पंचीकरण है उसी प्रकार से हमारे भौतिक शरीर में भी पंच महाभूतों का पंचीकरण ही है। पंच तत्त्व से युक्त यह शरीर है। इस दृष्टि से भी शरीर को समस्त तत्त्वों की आवश्यकता होती है।

जिस प्रकार पंच महाभूतों का पंचीकरण है। आपस में जुड़े हैं सबसे सब प्रभावित हैं। उसी प्रकार लघुकरण (रिड्यूस), पुनरुपयोग (रीयूज), पुनश्चक्रण (रीसाइकल) भी आपस में एक दूसरे से जुड़े हुए हैं। इनकी तिकड़ी है।





The way part of all elements is present in five elements and get affected by one another in the same way the 3-R too are connected with each other. And they are affected by each other. From this point of view, seeds of the 3-R can also be seen in the creation of the universe. Our Vedic sages and our ancestors adopted the use of this 3-R method and adopted it in their lifestyle and without making much effort they preserved the environment. Their life was based on nature. The 3-R method is as capable as a *Sanjeevani* (Herb) for resolving the present day's problems.

**Yā sṛṣṭīah sraṣṭurādyaḥ, vahati vidhihutaṃ yā haviryā ca hotrī,
ye dve kālṃ vidhattaḥ, śrutiviṣayaguṇā yā sthitā vyāpya viśvam / Yāmāhuḥ
sarvabījaprakṛtiriti yayā prāṇīnaḥ prāṇāvantaḥ,
pratyakṣābhiḥ prapannastanubhiravatu vastābhiraṣṭābhirīśaḥ // Kālidāsa,
abhijñānaśākuntalama**

Kalidas has also conversed about the creation of the universe in his play 'AbhigyanShakuntalam' and worshipped to God made of eight idols for our overall welfare. The God's worshipped included first of all water idol, fire idol, Sun and moon idols, the idol of the sky, the idol of the earth and air idol to bless us.





आवासन और शहरी
कार्य मंत्रालय
भारत सरकार



जिस प्रकार पंचीकरण में समस्त महाभूतों का अंश आपस में व्याप्त हैं और एक दूसरे से प्रभावित होते हैं। उसी प्रकार 3-आर भी आपस में जुड़े हैं, और एक दूसरे से प्रभावित होते हैं। इस दृष्टि से 3-आर का बीज सृष्टि की उत्पत्ति में भी देख सकते हैं। इस 3-आर विधि को वैदिक ऋषि से लेकर बाद के मनीषियों एवं पूर्वजों ने भी अपने जीवनशैली में अपनाकर पर्यावरण-संरक्षण सहज भाव से बिना प्रयास से ही किया करते थे। उनका जीवन ही प्रकृति पर आधारित था। वर्तमान समस्याओं के समाधान हेतु 3-आर विधि संजीवनी की तरह समर्थ है।

या सृष्टिः स्रष्टुराद्या, वहति विधिहुतं या हविर्या च होत्री,
ये द्वे कालं विधत्तः, श्रुतिविषयगुणा या स्थिता व्याप्य विश्वम् ।
यामाहुः सर्वबीजप्रकृतिरिति यया प्राणिनः प्राणवन्तः,
प्रत्यक्षाभिः प्रपन्नस्तनुभिरवतु वस्ताभिरष्टाभिरीशः ॥ कालिदास, अभिज्ञानशाकुन्तलम् 1.1

कालिदास ने भी अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक में सृष्टि का संकेत किया है एवं आठ मूर्तियों से युक्त ईश्वर से कल्याण करने की प्रार्थना की गयी है। विधाता की सर्वप्रथम सृष्टि जल रूपी मूर्ति, अग्नि रूपी मूर्ति, होता रूपी मूर्ति, सूर्य एवं चन्द्ररूपी मूर्ति, आकाश रूपी मूर्ति, पृथिवी रूपी मूर्ति, वायुरूपी मूर्ति से युक्त ईश्वर कल्याण करें।





In this verse, elements on which the entire life is based had been divulged. The whole life and routine are dependent on the five elements, the Sun and the Moon and the host of performing Yajña.

So we must understand them as our duty and be grateful and preserve them. In order to preserve them, we can make use of the 3-R method.

In Kamayani, Jaishankar Prasad has depicted the uniformity of nature, human or living being and non- living being.

Nīce jala thā upara hima thā, ek tarala thā eka saghana/ Eka tatva kī hī pradhānatā, use kaho jaḍa yā cetana// kāmāyanī

The way leaves of a tree are different from the other trees. Flowers and fruits of that tree, branch, stem, root, animate etc. look different. But when we look at that collectively, there is only one tree. In the same way, even though all these five elements vary but they are the same one.

In the same way, the 3-R practices are different from each other, even though it is the same in the whole form. From this point of view also it is close to nature. It is all parts of nature. In nature, all these actions are taking place, which is the purpose of the 3-R. Although the terminology of the 3-R method may be modern, its purpose and function and seed are from the time of creation.





आवासन और शहरी
कार्य मंत्रालय
भारत सरकार



इस श्लोक में सम्पूर्ण जीवन जिस पर आधारित है उन तत्त्वों को बताया गया है। पंच महाभूत एवं सूर्य चन्द्रमा तथा यज्ञ करने वाला यजमान पर ही सम्पूर्ण जीवन एवं दिनचर्या निर्भर है। इसलिए इन तत्त्वों के प्रति अपना कर्तव्य समझकर इनके प्रति कृतज्ञ होना चाहिए और इनका संरक्षण करना चाहिए। 3-आर विधि का प्रयोग कर इनका प्रतिफलित संरक्षण किया जा सकता है।

कामायनी में जयशंकर प्रसाद ने प्रकृति एवं मानव या जड़, चेतन की एकरूपता दिखायी है।

नीचे जल था उपर हिम था, एक तरल था एक सघन।

एक तत्त्व की ही प्रधानता, उसे कहो जड़ या चेतन। कामायनी

जिस प्रकार एक वृक्ष की पत्तियाँ अन्य पत्तियों से अलग होती हैं। उस वृक्ष का फूल, फल, डाली, तना, जड़ आदि अलग-अलग दिखते हैं, लेकिन जब समष्टि रूप से देखते हैं तो एक ही वृक्ष होता है। उसी प्रकार समस्त तत्त्व अलग-अलग होते हुए भी एक ही हैं। एक दूसरे से जुड़े हैं एक दूसरे को प्रभावित करते हैं।

इसी प्रकार 3-आर आपस में अलग होते हुए भी समष्टि रूप में एक ही हैं। इस दृष्टि से भी प्रकृति के निकट हैं। प्रकृति के अंग हैं। प्रकृति में ये समस्त क्रियायें होती हैं जो 3-आर का उद्देश्य है। 3-आर विधि की शब्दावली भले ही आधुनिक हो परन्तु इसका उद्देश्य, कार्य एवं बीज सृष्टि के समय से ही है।





Imāni pañcamahābhūtāni pṛathivī, vāyuh ākāśhaḥ āpajyotīṣi / Aitareyopaniṣad 3.3

The life of the all human and other living things depends on this nature only. The Vedic sages were aware of the divine powers contained in natural powers. They understood that those divine powers behind the earth, water, sky, air, sun, rain etc. are giving their whole affections to the human race. That is why the sages began to experience their proximity and worshipped them as gods. The nature of deities is also considered natural phenomenon. Their dedication towards Nature, integrity, devotion, gratefulness, affection and gratitude perception brought them closer to nature. Sages and our ancestors adopted the 3-R method in their daily life established their identity with nature and began to achieve the ultimate goal of living a healthy, happy and long life and this was the tradition of India. Obtaining Purushartha Chatustaya (religion, essence, sensuality, salvation) is also dependent on nature (earth, water, fire, air, sky). The Indian tradition has ensured that we are continuously discharging our duties without affecting nature and this continues even now in various ways. This is the speciality of Indian culture. Nature ensure welfare only with all of these elements to the conscious, unconscious, movable and immovable. If one element of nature's balance gets destroyed it began to affect another element too. The environment gets polluted and many types of obstacles are created which threatens both human and other living things. In our Indian culture, Human has always been consuming as per the requirement. The 3-R (Reduce, Reuse, and Recycle) and Zero-Waste management have been an inseparable part of life in Indian culture since ancient times. At present, everyone is conscious of protecting the environment by accepting this method and implementing it. It is indeed a positive sign.





इमानि पंचमहाभूतानि पृथिवी, वायुः आकाशः आपो ज्योतीषिं । ऐतरेयोपनिषद् 3.3

इस प्रकृति पर ही सम्पूर्ण मानव एवं मानवेतर प्राणी का जीवन निर्भर है। वैदिक ऋषियों ने यह भाव प्राकृतिक शक्तियों में निहित दिव्य शक्तियों के प्रति प्राप्त किया। उन्हें यह अनुभव हुआ कि पृथ्वी, जल, वायु, आकाश, सूर्य, वर्षा इत्यादि के पीछे दिव्य शक्तियाँ मनुष्य को अपना स्नेह सर्वस्व प्रदान कर रही हैं। इसीलिए ऋषिगण उनसे आत्मिक नैकट्य अनुभव करने लगे एवं देवताओं के रूप में उनका स्तवन किया। देवताओं का स्वरूप अपुरुषविध (प्राकृतिक रूप) भी माना गया है। प्रकृति के प्रति ऋषियों का समर्पण भाव, सत्यनिष्ठ अनुराग, कृतज्ञता बोध आदि ने उनकी चेतना को प्रकृतिमय बना दिया। ऋषि या पूर्वज 3—आर विधि को दैनिक जीवन में अपनाकर एवं प्रकृति से तादात्म्य स्थापित कर स्वस्थ, सुखमय, दीर्घायु जीवन जीते हुए परम लक्ष्य की प्राप्ति करने लगे यही भारतीय परम्परा रही है। पुरुषार्थ चतुष्टय (धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष) की प्राप्ति भी प्रकृति पर ही (पृथ्वी, जल, तेज, वायु, आकाश) निर्भर है। प्रकृति को बिना प्रभावित किये भारतीय परम्परा इसी का निर्वहण करती चली आ रही है। यह भारतीय संस्कृति की विशेषता है। प्रकृति इन्हीं तत्त्वों से चेतन, अचेतन, जंगम, स्थावर सभी का कल्याण करती है। प्रकृति का एक तत्त्व का संतुलन बिगड़ने पर प्रतिफलित दूसरा तत्त्व भी प्रभावित होने लगता है। पर्यावरण प्रदूषित हो जाता है और अनेक प्रकार की बाधाएँ उत्पन्न हो जाती हैं जो मानव एवं मानवेतर समस्त चराचर जगत् के लिए खतरा बन जाती हैं। सदा से ही भारतीय संस्कृति में मानव प्रकृति से आवश्यकतानुसार ही ग्रहण करता आ रहा है। 3—आर (रिड्यूस, रीयूज, रीसाइकल) तथा पूर्ण उपयोग (हन्ड्रेड परसेन्ट यूज) शून्य अपशिष्टता (जीरो वेस्ट) वाला प्रबन्धन प्राचीन समय से ही भारतीय संस्कृति में जीवनशैली का अंग रहा है। वर्तमान में सभी इस पद्धति को आदर्श मानते हुए इसे स्वीकार कर पर्यावरण—संरक्षण के प्रति जागरूक होकर आगे बढ़ रहे हैं, यह शुभ लक्षण है।





Ministry of Housing
and Urban Affairs
Government of India



Chapter 2 Conservation of Water





आवासन और शहरी
कार्य मंत्रालय
भारत सरकार



अध्याय 2

जल-संरक्षण





Chapter 2 Conservation of Water

Our physical body is made of five elements i.e. earth, water, light, air and sky. Chiti jala pāvaka gagana samīrā/ Pañca racita yaha adhama sarīrā// tulasīdāsa, had explained it in so simple words in Rāmacaritamānasa. There is plenty of water element in the body. Life cannot be perceived in the absence of any of these elements. Every element is required in an appropriate proportion and that appropriate proportion is really there in our body. Our life depends on them that is why, it is said that water is life. Water is an essential element for our life, it is also necessary for all human and living beings, trees, medicines etc. This water element has been described in a variety of ways from the Ṛgveda to the Arvachin literatures.

In Indian tradition, water has always been regarded as deities-goddess. The Indian way of life was modulated in such a way so that our ancestors never polluted water, instead they used to protect and preserve it. This tradition is visible from Ṛgveda to present modern literature and in public life.





अध्याय 2 जल-संरक्षण

हमारा भौतिक शरीर पंचतत्त्व पृथ्वी, जल, तेज, वायु, आकाश से ही बना है। क्षिति जल पावक गगन समीरा। पंच रचित यह अधम सरीरा। तुलसीदास जी ने भी इसे रामचरित मानस में सहज भाव में कहा है। शरीर के अन्दर जल तत्त्व की अधिकता भी है। किसी भी तत्त्व के अभाव में जीवन की परिकल्पना ही नहीं की जा सकती। हर तत्त्व का समुचित मात्रा में होना आवश्यक है और समुचित मात्रा है भी। हमारा जीवन ही इन्हीं पर निर्भर है इसीलिए कहा जाता है जल ही जीवन है। जीवन के लिए जल बहुत आवश्यक तत्त्व है यह मानव एवं मानवेतर तथा वृक्ष और ओषधियों आदि के लिए भी आवश्यक है। इस जल तत्त्व का ऋग्वेद से लेकर अर्वाचीन साहित्य तक में अनेक प्रकार से वर्णन किया गया है।

भारतीय परम्परा में सदा से ही जल को देवता की संज्ञा से अभिहित किया गया है। भारतीय जीवनशैली ही इस प्रकार की थी कि जल को हमारे पूर्वज कभी दूषित करते ही नहीं थे सदा से ही उसका संरक्षण करते थे। यह परम्परा ऋग्वेद से लेकर वर्तमान आधुनिक साहित्य में ही नहीं अपितु लोक-जीवन में भी व्याप्त है।





They used to consume nature while preserving water and environment. It was due to their gratitude towards nature or five elements, a sense was awakened to see these elements as deities and god in nature, which is still prevailing even today in some form or other. This expression of god has helped in water conservation. The objective of reduce, reuse, recycle, 3-R is also the preservation and cleanliness of water and alike elements and all of nature. By adopting 3-R as an integral part of our life we can easily preserve water and other elements. So that all creatures can get a clean environment, healthy, clean life, pure water, clean air etc.

**Āpo hiṣṭhā mayobhuvastā na ūrje dadhātanah /
maheraṇāya cakṣase // Ṛgveda 10.9.1**

In the Ṛgveda, water is considered as the basis of happiness. Food and knowledge are received by water only. Its conservation is the ultimate duty of every one. The 3-R method is capable of making important contributions to it.

**Mā.āpo hinsīah, mā oṣadhīrhisīh/ yajurveda 6. 22
apah pinva, oṣadhīrjinva / Yajurveda 14. 8**





आवासन और शहरी
कार्य मंत्रालय
भारत सरकार



हमारे पूर्वज जल का या पर्यावरण का संरक्षण करते हुए प्रकृति का उपयोग करते थे। प्रकृति या पंच तत्त्वों के प्रति कृतज्ञता के कारण ही इन तत्त्वों को देवरूप में एवं देव को प्रकृति रूप में देखने का भाव जागृत हुआ जो आज भी किसी न किसी रूप में चला आ रहा है। यह देवभाव ही प्रतिफलित जल-संरक्षण ही था। लघुकरण (रिड्यूस), पुनरुपयोग (रीयूज), पुनश्चक्रण (रीसाइकल), 3-आर (रिड्यूस, रीयूज, रीसाइकल) विधि का उद्देश्य भी जलादि तत्त्वों एवं प्रकृति का संरक्षण एवं स्वच्छता ही है। 3-आर को जीवन का अंग बनाकर फलरूप में जलादि संरक्षण सहज भाव से किया जा सकता है। जिससे समस्त प्राणी को स्वच्छ वातावरण, स्वस्थ एवं स्वच्छ जीवन, शुद्ध जल, स्वच्छ वायु आदि प्राप्त हो सके। 3-आर विधि धनादि का अपव्यय भी रोककर धन संरक्षित करने में भी सहायक है।

आपो हि ष्ठा मयोभुवस्ता न ऊर्जे दधातन। महे रणाय चक्षसे ॥ ऋग्वेद 10.9.1

ऋग्वेद में जल को आपः कहा गया है। इसे ही सुख का आधार भी माना गया है। जल से ही अन्न एवं ज्ञान की प्राप्ति होती है। इसका संरक्षण सबका परम कर्तव्य है। 3-आर विधि इसमें महत्त्वपूर्ण योगदान देने में समर्थ है।

माऽपो हिंसीः, मा ओषधीर्हिंसीः। यजुर्वेद 6.22

अपः पिन्व, ओषधीर्जिन्व। यजुर्वेद 14.8





One should not pollute the water as pure water is essential for both human's life and living things. It remains in the form of juice even in the medicines/herbs. Therefore, polluted water also affects the herbs. Thus, the 3-R impacts directly and indirectly in both forms favourably. Hence, this method is exemplary.

**Mūtraṃ vā.ath purīṣṃ vā gṃgātīre karoti yaḥ,
..Śleṣmāṇaṃ vāpi niṣṭhīvṃ dūṣitāmbvaśrumalam/
uccīṣṭṃ kaphakṃ caiva gṃgāgarbhe ca yastyajet/
Sa yāti narakṃḡ ghorm brahmahatyā ca vindati/ Padmapurāṇa kriyāyoga 8. 8-10**

Spitting, throwing garbage, creating filthiness etc. in the river water is a great sin. Water is polluted due to this. Water can be preserved through reuse of water. One must consume only as much water as it is necessary. After taking bath or washing clothes, the remaining water can be used to irrigate plants or farms. Rainwater harvesting should also be practiced.

Śaṃ no devīrabhiṣṭaya āpo bhavantu pītaye/ Śaṃ yorabhi sravatu naḥ/ Yajurveda 36. 12

Revering rivers as Goddess, respecting them is preserving water.

**Saṃ naḥ kanikradaddevaḥ parjanya abhivarṣatu/ Yajurveda 36. 10
Nikāme nikāme naḥ parjanya varṣatu phalaṃ vatyō na oṣadhayaḥ pacyantāṃ
yogakṣemo naḥ kalpantām / Yajurveda 22. 22**





आवासन और शहरी
कार्य मंत्रालय
भारत सरकार



जल को प्रदूषित नहीं करना चाहिए, शुद्ध जल मानव एवं मानवेतर प्राणी के जीवन के लिए आवश्यक है। यह ओषधियों में भी रस के रूप में रहता है। अतः प्रदूषित जल ओषधियों को भी प्रभावित करता है। इस प्रकार 3-आर प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष दोनों रूपों से अनुकूल प्रभाव डालता है। अतः यह विधि अनुकरणीय है।

मूत्रं वाऽथ पुरीशं वा गंगातीरे करोति यः,
..श्लेष्माणं वापि निष्ठीवं दूषिताम्ब्वश्रुमलम्।
उच्छिष्टं कफकं चैव गंगागर्भे च यस्त्यजेत्।
स याति नरकं घोरं ब्रह्महत्या च विन्दति। पद्मपुराण क्रियायोग 8.8-10

नदियों के जल में थूकना, कूड़ा करकट डालना, गन्दगी करना आदि महापाप है। इससे जल प्रदूषित होता है। जल का पुनरुपयोग (रीयूज) करके भी जल-संरक्षण किया जा सकता है। जल का उतना ही उपयोग करना चाहिए जितना आवश्यक हो। नहाने का जल या कपड़े धोने के उपरान्त बचा जल पेड़ पौधों या खेतों में डाला जा सकता है। वर्षा का जल भूमि में संरक्षित करने का प्रबन्धन करना चाहिए।

शं नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शं योरभि स्रवन्तु नः। यजुर्वेद 36.12

नदियों को देवी की संज्ञा से अभिहित करना उनके प्रति श्रद्धा करना प्रतिफलित जल-संरक्षण ही है।

सं नः कनिक्रदददेवः पर्जन्यो अभिवर्षतु। यजुर्वेद 36.10

निकामे निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो न ओषधयः पच्यन्तां

योगक्षेमो नः कल्पताम्। यजुर्वेद 22.22





It has been prayed that roaring rain god shower happy rains time to time and herbs becomes fruitful. This is only possible if environment is well protected. The method of performing Yajña and 3-R are directly or indirectly helpful in both its forms.

**Yā āpo divyā uta vā sravanti khanitrimā uta vā yāḥ svayṃjāḥ/
Samudrārthā yāḥ śucayaḥ pāvakāstā āpo devīriḥ māmavantu/ Ṛgveda 7.49.02**

Water is obtained from the sky. It flows in rivers, we get it after digging wells, and is produced by themselves. It is supposed to purify and be holy and move towards the sea. These divine waters protect us. This is the kind of prayer which is made. Conservation of water is also necessary from this point of view. Pure water is essential for good health and long life.

Mā āpo hinsīaḥ/ Yajurveda 06. 22

One should never destroy the purity of water and also should not waste it. Polluting, misusing, wasting and not preserving water is a gross violence in itself.

**Yāḥ pravato nivata udvata udanvatīranudakāśca yāḥ /
tā asmabhyaṃ payasā pinvamānāḥ śivā devīraśipadā
bhavantu sarvā nadyo aśimidā bhavantu // Ṛgveda 7.50.4**





आवासन और शहरी
कार्य मंत्रालय
भारत सरकार



गर्जन करता हुआ पर्जन्य देव हमारे लिए समय-समय पर सुखद वृष्टि करें एवं ओषधियाँ फलवती हों ऐसी प्रार्थना की गयी है। यह तभी सम्भव है जब पर्यावरण-संरक्षण होगा। यज्ञ एवं 3-आर प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष दोनों रूपों में इसमें सहायक हैं।

या आपो दिव्या उत वा स्रवन्ति खनित्रिमा उत वा याः स्वयंजाः।
समुद्रार्था याः शुचयः पावकास्ता आपो देवीरिह मामवन्तु।। ऋग्वेद 7.49.2

जल आकाश से प्राप्त होते हैं। नदियों में बहते हैं, खोदकर कूप से प्राप्त होते हैं, और स्वयं उत्पन्न होते हैं। शुद्धता एवं पवित्रता करने वाले हैं एवं समुद्र की ओर जाने वाले हैं। ये दिव्य जल हमारी यहाँ रक्षा करें। इस प्रकार की प्रार्थना प्राप्त होती है। इस दृष्टि से भी जल-संरक्षण आवश्यक है। शुद्ध जल अच्छे स्वास्थ्य एवं जीवन के लिए भी आवश्यक है।

मा आपो हिंसीः। यजुर्वेद 6.22

जल की शुद्धता को कभी नष्ट नहीं करना चाहिए एवं उसका अपव्यय भी नहीं करना चाहिए। जल को प्रदूषित करना दुरुपयोग करना अपव्यय करना जल का संरक्षण न करना भी अपने आप में जल की हिंसा करना ही है।

याः प्रवतो निवत उद्वत उदन्वतीरनुदकाश्च याः।
ता अस्मभ्यं पयसा पिन्वमानाः शिवा देवीरशिपदा
भवन्तु सर्वा नद्यो अशिमिदा भवन्तु। ऋग्वेद 7.50.4





Those rivers which flows in the plain regions or which flows in the lower region or which are full with water or which have a little water, those rivers contribute to our welfare by satiating water. They remove our diseases. Water and rivers are like our mothers. They make us strong and sanctified like ghee with its water. Such water must be now preserved by adopting the 3-R method so that its quality remains intact.

**Rahimana pānī rākhie bina pānī sabasūna/
Pānī gaye na ūbare motī mānuṣ cūn// Rahīma**

In the later literature, authors have always given importance to water. Water is called Pani. Subsequently, meaning of Pani became extensively expanded and used in many other ways. It was conscientiously said to preserve the water and the character. 3-R (Reduce, Reuse, Recycle) is also an effort. It results in helping to protect it in all respects.

Mahadevi Verma has described a poignant depiction of the arrival of rain in her poem titled 'Rain'

**Soṃdhī sugandha bharī dharatī ne manahu nija saāsan dhūp jarāī/
vāt ke haya valgā kari bījurī megha ke ratha varṣā caḍhi āī // Mahādevī Varmā**





आवासन और शहरी
कार्य मंत्रालय
भारत सरकार



जो नदियाँ समतल प्रदेश में बहती हैं या जो निम्नप्रदेश में या जो उच्चप्रदेश में या जो जल से भरी हों या जिसमें थोड़ा जल हो वे नदियाँ जल से तृप्त करती हुई हमारा कल्याण करती हैं। रोगों को भी दूर करती हैं। जल एवं नदियाँ हमारी माताएँ हैं। वे घृत के समान जल से हमें बलिष्ठ और पवित्र करती हैं। ऐसा जल 3-आर विधि को अपनाकर वर्तमान में भी संरक्षण करने योग्य है। जिससे इसकी गुणवत्ता बनी रहे।

रहिमन पानी राखिए बिन पानी सब सून।
पानी गये न ऊबरे मोती मानुस चून।। रहीम

परवर्ती साहित्य में भी साहित्यकारों ने जल को सदा ही महत्त्व दिया है। जल को पानी कहा है। पानी का बाद में अर्थ-विस्तार होकर अन्य अर्थों में भी इसका प्रयोग होने लगा। पानी एवं चरित्र को यत्नपूर्वक संरक्षित करने की बात इस दोहे में कही गई है। 3-आर (रिड्यूस, रीयूज, रीसाइकल) भी एक यत्न ही है। यह समस्त प्रकार से जल की रक्षा करने में सहायक है।

महादेवी वर्मा ने वर्षा के आगमन का मार्मिक चित्रण 'वर्षा' नामक कविता में किया है।

साँधी सुगन्ध भरी धरती ने मनहु निज साँसन धूप जराई।
वात के हय वल्गा करि बीजुरी मेघ के रथ वर्षा चढ़ि आई।। महादेवी वर्मा





The significance of water's glory is visible in that.

Ramdhari Singh 'Dinkar' has described the relation of water and earth in his poem of Himalaya's message.

Jaise megha dharā se uṭhakarā ambar par ghiratā hai/

aura vāri bana fir vasudhā ke hī tana para giratā hai/ Rāmadhārī siṃha 'Dinakara'

Clouds rise from the earth and goes into the sky and pour on the earth in the form of water.

It is necessary to make a balance with nature. Water conservation and environment protection are important for life. Tampering with nature can have serious consequences.

Nagarom ko nirmala rakhane kā aisā dḥmga nikālā/

Nadiyom ko kaluṣita, samudra takako dūṣita kara ḍālā/

dharatī kā antara khagālanā hī ab badī pragati hai,

hariyāliyaā jalākara hī aba karatā jaga unnati hai/

yaha sṃtulana-vināś prakṛti kā vṛthā nahīn jāyegā,

āja duḥkhī hai manuja aura kala niścaya pachatāyegā// Rāmadhārī Siṃha 'Dinakara'

Water conservation is essential, otherwise the water crisis will arise. If human beings will not

preserve nature while ensuring physical progress, then the situation will become serious and there

will be no alternative other than repentance. Keeping this in mind the public must be aware well in

time, and adopt the lifestyle adopted by the sages and avoid the future crisis. 3-R is the milestone for

this.





इसमें जल के वैभव की प्रधानता भी दृष्टिगोचर होती है।
रामधारी सिंह 'दिनकर' ने हिमालय का संदेश कविता में जल और पृथ्वी के सम्बन्ध को बताया है।

जैसे मेघ धरा से उठकर अम्बर पर धिरता है।
और वारि बन फिर वसुधा के ही तन पर गिरता है। रामधारी सिंह 'दिनकर'
बादल पृथ्वी से उठकर आकाश में जाते हैं और जल के रूप में पृथ्वी पर बरसते हैं।
प्रकृति के साथ संतुलन बनाना आवश्यक है। जल-संरक्षण एवं पर्यावरण-संरक्षण जीवन के लिए महत्त्वपूर्ण है।
प्रकृति के साथ छेड़-छाड़ का गंभीर परिणाम हो सकता है।

नगरों को निर्मल रखने का ऐसा ढंग निकाला।
नदियों को कलुषित, समुद्र तक को दूषित कर डाला।
धरती का अन्तर खगालना ही अब बड़ी प्रगति है,
हरियालियों जलाकर ही अब करता जग उन्नति है।
यह संतुलन -विनाश प्रकृति का वृथा नहीं जायेगा,
आज दुःखी है मनुज और कल निश्चय पछतायेगा।। रामधारी सिंह 'दिनकर'

जल-संरक्षण अत्यावश्यक है नहीं तो जल का संकट उत्पन्न हो जायेगा। मानव भौतिक प्रगति हेतु प्रकृति का संरक्षण नहीं करेगा तो परिस्थितियाँ गम्भीर हो जायेगीं और पश्चाताप के अतिरिक्त कोई विकल्प भी नहीं होगा। इस दृष्टि से भी जनमानस को समय रहते सजग हो जाना चाहिए और मनीषियों के द्वारा अपनाई गयी जीवनशैली को अपनाकर भविष्य के इस संकट से बचा जा सकता है। 3-आर इसमें मील का पत्थर सिद्ध हो सकता है।





**Pānī ko lalāta, bilalāta, jare gāt jāta, pare pā_imāla jāta, bhrāta tū nibāhi re/
priyā tu parāhi, nātha nātha tū parāhi, bāpa bāpa! tū parāhi, pūta pūta tū parāhi re//
Tulasīdāsa, Kavitāvalī**

One has to escape from the cycle of wasteful use of water or no water will be found anywhere. All who are keen to protect water, will anxiously request each other to preserve the water for avoiding a serious water crisis but they will be incapable in helping all. The 3-R method should be used diligently.

**Kaha giradhara kavirāya, baḍena kī yāhī bānī/
calie cāla sucāla rākhiye apano pānī/ Giradhara kī kuṇḍāliyaā/**

Water is also called 'Pani' because it is to be drunk. Giridhar Kaviray has also described the water and character designated as Pani through allegory. He focussed attention on the protection of both water and character. By following the right path character is protected, and in the same way, the water and environment is protected using the right path like 3-R, Reduce, Reuse and Recycling. More attention has now improved conservation efforts.

There used to be so many ponds everywhere in each and every village and many of them exists even today. This is where water is collected. So that everyone can get water and water level can also be maintained. It is a key feature of ancient Indian culture.





पानी को ललात, बिललात, जरे गात जात, परे पाइमाल जात, भ्रात तू निबाहि रे।
प्रिया तु पराहि, नाथ नाथ तू पराहि, बाप बाप! तू पराहि, पूत पूत तू पराहि रे।।
तुलसीदास, कवितावली

जल के लिए पलायन करना होगा लेकिन कहीं भी जल नहीं मिलेगा। सभी जल के लिए लालायित होंगे, व्याकुल होंगे एक दूसरे से जल-संकट से बचाने के लिए प्रार्थना भी करेंगे परन्तु सभी सहायता करने में अस्मर्थ होंगे।
3-आर विधि का प्रयोग यत्न पूर्वक करके इस संकट से बचा जा सकता है।

कह गिरधर कविराय, बड़ेन की याही बानी।
चलिए चाल सुचाल राखिये अपनो पानी। गिरधर की कुंडलियाँ।

जल को पानी भी कहते हैं क्योंकि इसे पिया जाता है। गिरधर कविराय ने भी अन्योक्ति के माध्यम से जल एवं चरित्र को पानी की संज्ञा से अभिहित किया है। जल एवं चरित्र दोनों के संरक्षण पर ध्यान आकृष्ट कराया है। जिस प्रकार सुमार्ग (सुकृत) से चरित्र की रक्षा होती है उसी प्रकार से 3-आर, लघुकरण (रिड्यूस), पुनरुपयोग (रीयूज), पुनश्चक्रण (रीसाइकल), रूपी सुमार्ग से जल एवं पर्यावरण का संरक्षण होता है।

हर जगह गाँव-गाँव में अनेको तालाब होते थे वर्तमान में भी हैं। जहाँ जल एकत्र किया जाता है। जिससे सब को जल मिल सके एवं जलस्तर भी व्यवस्थित रहे। प्राचीन भारतीय संस्कृति की प्रमुख विशेषता है।





**Acireṇa tu kālena parivāhān bahudakān/
cakrurbahuvidhākārān sāgarapratimān bahun // Valamiki R. 2.80.11**

The small streams of water which was flowing all around. By making dams it was transformed into a huge reservoir, the same way, so many different types of ponds were prepared, which seems like the ocean because of being filled with profound water.

This system should be maintained everywhere, it should not be allowed to deteriorate. This is the oldest method of water conservation and water consolidation and is relevant even today. Pure water can be provided to the society by preserving water and nature by adopting the lifestyle adopted by our ancestors along with 3-R (Reduce, Reuse, Recycle) etc. Every citizen should be cautious and must alert others too, then only this goal can be achieved.





आवासन और शहरी
कार्य मंत्रालय
भारत सरकार



अचिरेण तु कालेन परिवाहान् बहूदकान् ।
चक्रुर्बहुविधाकारान् सागरप्रतिमान् बहुन् ॥ वाल्मीकि रामायण 2.80.11

छोटों-छोटों सोतों को, जिनका पानी सब ओर बहता था। चारों ओर से बाँधकर शीघ्र ही अधिक जलवाला बना दिया गया, इसी तरह भिन्न-भिन्न आकार प्रकार के बहुत से सरोवर तैयार कर दिये गये, जो अगाध जल से भरे होने के कारण समुद्र के समान जान पड़ते हैं।

इस व्यवस्था को सर्वत्र बनाये रखना चाहिए इसे बिगड़ने नहीं देना चाहिए। जल-संरक्षण एवं जल एकत्रीकरण की यह प्राचीनतम एवं उत्तम विधि है जो आज भी प्रासंगिक है। पूर्वजों द्वारा अपनायी गयी जीवनशैली एवं 3-आर (रिड्यूस, रीयूज, रीसाइकल) विधि के द्वारा जल एवं प्रकृति का संरक्षण करके समाज को शुद्ध जल उपलब्ध कराया जा सकता है। प्रत्येक नागरिक को इसके प्रति सजग होना चाहिए एवं दूसरों को भी सजग करना चाहिए तभी लक्ष्य को प्राप्त किया जा सकता है।





Ministry of Housing
and Urban Affairs
Government of India



Chapter 3

Protection of Air



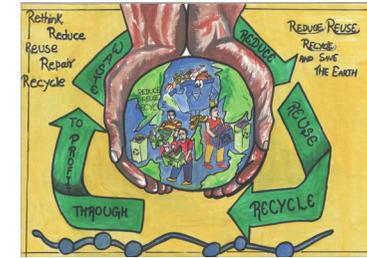


आवासन और शहरी
कार्य मंत्रालय
भारत सरकार



अध्याय 3

वायु-संरक्षण





Chapter 3 Protection of Air

The existence of all human and other living things is dependent on five elements (earth, water, light, air and sky). Air is equally needed for life in the same way as other elements are required. Air remains in our body as Pran, Vyan, Apan, and Udan. As air exists in nature in the same way air exists in our body too. Oxygen is essential for breathing. A wide variety of detailed descriptions are available about air from R̥gveda to later literature. Everywhere, special emphasis is given to air protection. Pure air is the basis of life.

Vāyurvātervetervā syādgatikarmaṇāḥ / Nirukta 10. 11

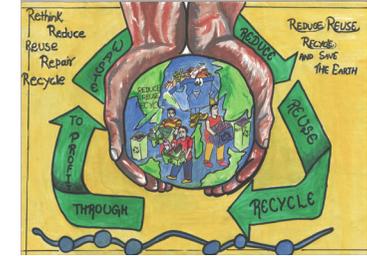




अध्याय 3 वायु-संरक्षण

पंच महाभूत (पृथ्वी, जल, तेज, वायु, आकाश) पर ही मानव एवं मानवेतर सभी का अस्तित्व निर्भर है। जीवन के लिए जिस प्रकार अन्य तत्वों की आवश्यकता है उसी प्रकार वायु की भी समान रूप से आवश्यकता है। वायु शरीर में प्राण, व्यान, अपान, उदान तथा समान के रूप में रहती है। प्रकृति में जिस तरह वायु है उसी तरह शरीर में भी वायु है। प्राणवायु श्वास के लिए आवश्यक है। वायु का ऋग्वेद से लेकर परवर्ती साहित्य आदि में अनेक प्रकार से विस्तृत विवेचन प्राप्त होता है। सर्वत्र वायु-संरक्षण पर विशेष बल दिया गया है। शुद्ध वायु जीवन का आधार है।

वायुर्वातेर्वेतेर्वा स्याद्गतिकर्मणः। निरुक्त 10.1





Vāti gachchhati iti Vāyuh gatyarthaka vā. The word 'vayu' is originated by adding suffix 'un' in dhatu 'yuk' in 'wa' or 'wi'. Air (vāyu) is called air because it flows very fast. Pure air is must for the purification of the environment. All measures and efforts should be made to prevent air pollution. 3-R (reduce, reuse, recycle) is directly or indirectly helpful in this. Our ancestors always used this method in their life. There was no need to take separate protective measures as it was inherent in their lifestyle. There is a need for conservation at present because our lifestyle has changed a lot. Even if we cannot change completely if we change partially and adopt the 3-R method in our lifestyle after getting motivation from our traditional lifestyle, then the environment will automatically be protected.

Both the air and the sun protects the world.

**Yuvaṃ vāyo savitā ca bhuvanāni rakṣathastau no muṃcatamaṃhasaḥ/
Atharvaveda 4. 25. 3**





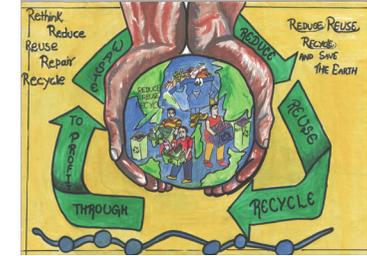
आवासन और शहरी
कार्य मंत्रालय
भारत सरकार



वाति गच्छति इति वायुः गत्यर्थक वा अथवा वी धातु से युक् आगम होकर उण् प्रत्यय से वायु शब्द बना है। वायु को वायु इसलिए कहते हैं क्योंकि यह गति करता है। पर्यावरण की शुद्धता के लिए शुद्धवायु का होना आवश्यक है। वायु को प्रदूषित होने से रोकने का पूरा उपाय एवं प्रयास करना चाहिए। 3-आर, लघुकरण (रिड्यूस), पुनरुपयोग (रीयूज), पुनश्चक्रण (रीसाइकल) इसमें प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से सहायक होता है। हमारे पूर्वज सदा से ही इस विधि का उपयोग अपने जीवन में करते थे। इसका संरक्षण करने की अलग से कभी भी आवश्यकता ही नहीं होती थी जीवनशैली में ही संरक्षण निहित था। वर्तमान में संरक्षण की आवश्यकता है क्योंकि जीवनशैली में अत्यधिक परिवर्तन आ गया है। यदि पूर्ण नहीं आंशिक भी भारतीय जीवनशैली से प्रेरणा प्राप्त कर 3-आर विधि को अपनाकर जीवन यापन किया जाय तो वायु-संरक्षण एवं पर्यावरण-संरक्षण स्वतः ही हो जायेगा।

वायु एवं सूर्य दोनों ही संसार की रक्षा करते हैं।

युवं वायो सविता च भुवनानि रक्षथस्तौ नो मुंचतमंहसः। अथर्ववेद 4.25.3





Life is based on air only. Life will be in danger if there is scarcity of oxygen and polluted air. Oxygen is necessary for all creatures, life is endangered due to lack of it and polluted air. There is also panchayat among the five elements. Everything is the part of everything. Just as a part of the body is affected by every part of the body in some form or after the rupture of the body. Similarly, other elements are also affected due to air pollution. Due to which the balance of nature gets worse. And many disasters start affecting life or air pollution becomes due to pollution of other elements. Thus a principle influences another element. Similarly, 3-R (reduce, reuse, recycle) also affects each other. The use of 3-R method effectively inhibits air pollution etc. and is directly or indirectly helpful in environmental protection.

Yadado vāta te ghr̥he amṛtasya nidhirhitaḥ |

tena no dehi jīvase // Ṛgveda 10.186.3

Tvṃ hi viśvabheṣaja/ devānām dūta īyase/ Atharvaveda 4. 13. 3

There is a nectar element (Amrita Tatva) in pure air. It gives life force energy. It is possible to cure many serious diseases with this. We should not do any such deed that affects air's nectar element i.e. life force energy. Prayer has also been offered to air, that O Air! There is a nectar element in you. Provide us for our life. In the same way, 3-R method is also the life force for the progress and happy and healthy life of the physical world.





वायु पर ही जीवन आधारित है। प्राणवायु समस्त प्राणियों के लिए आवश्यक है। प्रदूषित वायु के कारण जीवन खतरों में पड़ जाता है। पंच तत्त्व का आपस में पंचीकरण भी है। सबमें सब का अंश है। जिस प्रकार शरीर के किसी भाग में विकृति आने पर किसी न किसी रूप में शरीर का हर अंग प्रभावित होता है। उसी प्रकार वायु-प्रदूषण के कारण अन्य तत्त्व भी प्रभावित होते हैं। जिसके कारण प्रकृति का संतुलन बिगड़ जाता है। और अनेक आपदायें जीवन को प्रभावित करने लगती हैं अथवा अन्य तत्त्वों के प्रदूषण के कारण वायु प्रदूषित हो जाती है। इस प्रकार एक तत्त्व दूसरे तत्त्व को प्रभावित करता है। इसी प्रकार 3-आर (रिड्यूस, रीयूज, रीसाइकल) भी एक दूसरे को प्रभावित करता है। 3-आर विधि का प्रयोग फलरूप में वायु-प्रदूषण आदि को रोकता है एवं पर्यावरण-संरक्षण में प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से सहायक होता है।

यददो वात ते गृहे अमृतस्य निधिर्हितः।

तेन नो देहि जीवसे। ऋग्वेद 10.186.3

त्वं हि विश्वभेषज। देवानां दूत ईयसे। अथर्ववेद 4.13.3

शुद्धवायु में अमृत तत्त्व होता है। यह जीवनी शक्ति देता है। इससे अनेक गम्भीर रोगों की चिकित्सा भी सम्भव है। हमें ऐसा कोई कार्य नहीं करना चाहिए जिससे वायु का अमृत तत्त्व अर्थात् जीवनी शक्ति प्रभावित हो। वायु से प्रार्थना भी की गयी है हे वात! तुम्हारे गृह में अमृत तत्त्व है। हमें जीवन के लिए प्रदान करें। जिस प्रकार से वायु तत्त्व जीवनी शक्ति है उसी प्रकार 3-आर विधि भी भौतिक जगत की उन्नति एवं स्वस्थ, सुखमय जीवन के लिए जीवनी शक्ति है।





**Madhumāno vanaspatirmadhumām astu sūryaḥ/ mādhvīrgāvo bhavantu naḥ/ Yajurveda.
13. 29**

One, who follows the divine or natural laws and provides protection to the environment, winds bring sweetness, rivers bring sweet water and night and the dawn scatters suavity for such a person. His inner powers also get developed. For such a person, trees and herbs become sweet and healthy. The sun scatters its charming sun rays on him; the cows give sweet milk. 3-R is moving in entire nature. Initially, fruits of trees were bigger then gradually they became smaller. This way reduce concept started. Similarly, first of all, fruits came from the tree; seed originated from the fruit: again sapling came from the seed; and sapling became a tree. So Reuse and Recycling is the basic nature of nature. Our ancestors knew this 3-R method and they made it the integral part of their lifestyle and preserved nature. If even today, 3-R becomes a part of our lifestyle, then breeze can bring sweetness, rivers can bring sweet water, dawn can spread sweetness, herbs or medicines from trees and plants can be tasty and healthy.

Antarikṣaṃ dṛhaṃ, antarikṣaṃ mā hiṃsīaḥ/ Yajurveda 14. 12

Temperament of air is sweet, if it is not affected. Air should not be polluted, one should keep it pure.

Prāṇā pānu mṛtyormā pātaṃ svāhā/ Atharvaveda 2. 16. 1

Oxygen and Air protect us from death.





आवासन और शहरी
कार्य मंत्रालय
भारत सरकार



मधुमान्नो वनस्पतिर्मधुमाँ अस्तु सूर्यः। माध्वीर्गावो भवन्तु नः। यजुर्वेद 13.29

जो ऋत (ईश्वरीय अथवा प्राकृतिक नियमों) का पालन करता है, पर्यावरण को सुरक्षा प्रदान करता है, ऐसे व्यक्ति के लिए हवाएँ मधुरता लाती हैं, नदियाँ मीठा जल लाती हैं, रात और उषा मधुरता बिखेरती हैं और उसके अन्तस् का भी विकास होता है। ऐसे मानव के लिए पेड़-पौधे, ओषधियाँ मधुर और स्वास्थ्यवर्धक हो जाती हैं। सूर्य सुहावनी किरणें बिखेरता है, गौवें मीठा दूध देने वाली होती हैं। 3-आर पूरी प्रकृति में ही चल रहा है। वृक्ष मे फल आया फल में बीज हुआ बीज से पुनः पौधा हुआ पौधा वृक्ष बन गया इस प्रकार भी पुनरुपयोग एवं पुनश्चक्रण (रीयूज एवं रीसाइकिल) प्रकृति का स्वभाव है। इस 3-आर विधि को पूर्वज जानते थे यही कारण है कि उन्होंने इसे जीवनशैली का अंग बनाया और प्रकृति का संरक्षण किया। यदि आज भी 3-आर जीवनशैली का अंग बन जाय तो हवाएँ मधुरता ला सकती हैं, नदियाँ मीठा जल ला सकती हैं उषा मधुरता बिखेर सकती है पेड़-पौधे एवं ओषधियाँ मधुर एवं स्वास्थ्य वर्धक हो सकती हैं।।

अन्तरिक्षं दृंह, अन्तरिक्षं मा हिंसीः। यजुर्वेद 14.12

वायु का स्वभाव मधुर होता है यदि उसे दुष्प्रभावित न किया जाय। वायु को प्रदूषित नहीं करना चाहिए इसे शुद्ध बनाये रखना चाहिए।

प्राणापानौ मृत्योर्मा पातं स्वाहा। अथर्ववेद 2.16.1

प्राण और वायु मृत्यु से बचाती है।





Yatte śomcistena taṃ prati śoca yo asmān dveṣṭi yaṃ vayaṃ dviṣmaḥ/ Atharvaveda 2. 20. 4
Air is the biggest purifying element. Air becomes pure by pure air itself.

**Ugrā yā viṣadūṣaṇāīḥ. Atharvaveda 8. 7. 10, Prāṇao vai vanaspatiḥ/
Aitareya brāhmaṇa 2. 4**

Herbs and trees are the most helpful in preventing air pollution. Trees is said to be life.

Oṣadhayo mudaḥ/ Śatapath brāhmaṇa 9. 4. 1. 7

**Namo vṛkṣebhyo harikeśebhyaḥ/ vanānāṃ pataye namaḥ, oṣadhīnāṃ pataye namaḥ/
kākṣānāṃ pataye namaḥ vṛkṣāṇāṃ pataye namaḥ/ Yajurveda 16. 17-19**

Herbs and Trees provide happiness. Rudra Deity is the guardian and protector of trees, forests, herbs and vines. We greet Rudra. Rudra is a welfare god but his anger form is also very destructive. Similarly, the protection of the tree and such other things contributes to welfare. The trashing of trees is destructive and can have a catastrophic result. Similarly, 3-R is also welfare like Rudra. It is capable of preserving society, human and other living things but there can also be calamity if we do not use it (3-R).

Oṣadhīriti mātaraṣṭad vo devīrupa bruve / Ṛgveda 10.97.4

Plants , trees and herbs reduce pollution and nurture the earth like a mother.





आवासन और शहरी
कार्य मंत्रालय
भारत सरकार



वायो यत्ते शोचिस्तेन तं प्रति शोच यो अस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मः। अथर्ववेद 2.20.4
वायु सबसे बड़ा शोधक तत्व है। शुद्धवायु के द्वारा ही वायु शुद्ध होती है।

उग्रा या विषदूषणीः अथर्ववेद 8.7.10, प्राणो वै वनस्पतिः। ऐतरेय ब्राह्मण 2.4
वायु प्रदूषण को रोकने के लिए ओषधियाँ एवं वनस्पतियाँ सबसे ज्यादा सहायक होती हैं। इसीलिए वैदिक साहित्य में वनस्पतियों को प्राण कहा गया है।

ओषधयो मुदः। शतपथ ब्राह्मण 9.4.1.7
नमो वृक्षेभ्यो हरिकेशेभ्यः। वनानां पतये नमः, ओषधीनां पतये नमः।
कक्षाणां पतये नमः वृक्षाणां पतये नमः। यजुर्वेद 16.17-19

ओषधियाँ एवं वृक्ष प्रसन्नता प्रदान करते हैं। रुद्र देवता वृक्षों, वनों, ओषधियों, लताओं के पालक एवं रक्षक हैं रुद्र के लिए नमस्कार है। रुद्र कल्याणकारी देवता होते हैं लेकिन उनका रौद्ररूप भी बड़ा विनाशकारी होता है। इसी प्रकार वृक्षादि का संरक्षण कल्याणकारी होता है। वृक्षों का कर्तन भयंकर विनाशकारी परिणाम वाला होता है। इसी प्रकार 3-आर भी रुद्र की तरह कल्याणकारी है। वह समाज का संरक्षण, मानव एवं मानवेतर समस्त चराचर जगत् का संरक्षण वायु आदि का संरक्षण करने में समर्थ है परन्तु इसका (3-आर का) उपयोग न करना भयंकर परिणाम वाला होता है।

ओषधीरिति मातास्तद् वो देवीरूप ब्रुवे। ऋग्वेद 10.97.4
ओषधियाँ प्रदूषण को कम करती हैं एवं माता के समान भरण पोषण करती हैं।





Uta vāta pitāsi na uta bhrātotaḥ naḥ sakhā / Sa no jīvātave kṛdhi // Ṛgveda 10.186.2
Air is considered to be like the parent, brother and friend and the basis of life.

**Ayam yagyo bhuvnasya namih. Yajurveda 23.62, Krisish ch me vristisch me yagyen ...
kapantham. Yajurveda 18.9**

Yajña is a dominant part of Indian culture. It is the basis of the creation and life. Yajña also leads to increase in water and agriculture and environmental conservation.



According to the Mahabharata, the tree is said to be Chaitya.

**Eko vṛkṣo hi grāme bhavetparṇa phalānvitah/
caityo bhavati nirjñātirarcanīyah supūjitaḥ// Mahābhārata ādiparva 138-25**

A tree replete with leaves and fruits is worshipped by entire village as it benefits all. In addition, it reduces air pollution.



Puspam ch faluum navamilikaya prayanti kanti pramadajananam. Kālidāsa, Ritu sanhar 6.5
The flowers of trees create aromatic air and can also used in makeup and as ornaments. Even these also affects and purify the environment. All trees have the capability to prevent environmental pollution and reduce air pollution.





आवासन और शहरी
कार्य मंत्रालय
भारत सरकार



उत वात पितासि न उत भ्रातोत नः सखा। स नो जीवातवे कृधि। ऋग्वेद 10.186.2
वायु को माता-पिता, भाई एवं मित्र के समान तथा जीवन का आधार माना गया है।

अयं यज्ञो भुवनस्य नाभिः। यजुर्वेद 23.62, कृषिश्च मे वृष्टिश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्। यजुर्वेद 18.9
यज्ञ भारतीय संस्कृति का प्रमुख अंग है। सृष्टि एवं जीवन का आधार है। यज्ञ से जल एवं कृषि की वृद्धि भी होती है वायु-संरक्षण एवं पर्यावरण-संरक्षण भी होता है।

महाभारत में वृक्ष को चैत्य कहा गया है।

एको वृक्षो हि ग्रामे भवेत्पर्णफलान्वितः।

चैत्यो भवति निर्जातिरर्चनीयः सुपूजितः।। महाभारत आदि पर्व 138.25

एक वृक्ष जब पत्तों एवं फलों से युक्त होता है तो वह सम्पूर्ण गाँव के लिए कल्याणकारी एवं पूज्य होता है। वह वायु-प्रदूषण को दूर करता है।

पुष्पं च फुल्लं नवमल्लिकायाः प्रयान्ति कान्तिं प्रमदाजनानां। कालिदास, ऋतुसंहार 6.5

वृक्षों के फूलों से वायु सुगन्धित होती है। वे श्रृंगार एवं पुष्पसार हेतु भी प्रयोग में आते हैं। इसके परिणाम स्वरूप भी पर्यावरण सुरक्षित होता है। समस्त प्रकार के वृक्षों में पर्यावरण-संरक्षण एवं वायु-प्रदूषण रोकने की क्षमता होती है।





**Vidyāśca vā avidyāśca, yaccānyadupadeśyam/
Śarīrn brahma prāviśadṛcaḥ sāmātho yajuḥ/ Atharvaveda 11. 8. 23**

All kinds of knowledge is embedded within Humans. If man desires, all kinds of problems/constraints can be solved.

Everyone can get pure rejuvenated air from Reuse, Reduce, Recycle and Zero Waste Management. It can also be helpful in air protection and conservation of the environment. Indians' have been following this method since ancient times, it is a part of Indian culture. One should be aware of this method and also alert others about it. Only then everyone will get clean air, pure water and living and non-living beings will get a healthy and longer life.





विद्याश्च वा अविद्याश्च, यच्चान्यदुपदेश्यम् ।
शरीरं ब्रह्म प्राविशद्दृचः सामाथो यजुः । अथर्ववेद 11.8.23

मानव के अन्दर समस्त प्रकार के ज्ञान समाहित हैं। वह चाहे तो हर प्रकार की समस्याओं का समाधान कर सकता है।

मनीषियों की जीवनशैली संतुलित थी जो भारतीय विरासत है। 3-आर, लघुकरण (रिड्यूस), पुनरुपयोग (रीयूज), पुनश्चक्रण (रीसाइकल) एवं पूर्ण प्रयोग प्रबन्धन, शून्य अपशिष्ट प्रबन्धन (जीरो वेस्ट मैनेजमेण्ट) जीवन का अंग था। इस परम्परा का हमें पालन कर चाहिए जिसके प्रतिफलित रूप में शुद्धवायु सबको प्राप्त हो सके। वायु-संरक्षण एवं पर्यावरण-संरक्षण भी हो सके। भारतीय जनमानस सर्वदा से ही इस विधि का पालन करता चला आ रहा है। यह भारतीय संस्कृति का अंग है। इस विधि के प्रति सजग होना चाहिए एवं दूसरों को भी सजग करना चाहिए तभी सबको शुद्ध वायु, शुद्ध जलादि प्राप्त होगा तभी निरोग रहकर मानव एवं मानवेतर समस्त प्राणी दीर्घायु हो सकेंगे। साथ ही स्वच्छता को भी अनवरत रखा जा सकता है।





Ministry of Housing
and Urban Affairs
Government of India



Chapter 4 Protection of Earth



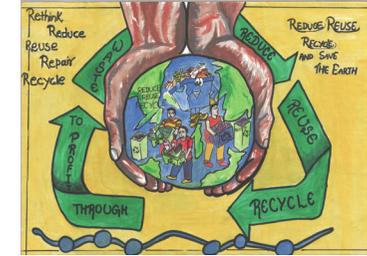


आवासन और शहरी
कार्य मंत्रालय
भारत सरकार



अध्याय 4

भूमि-संरक्षण





Chapter 4 Protection of Earth

Among the five elements, there are many types of prayers and attributes about the earth element (Prithvi Tatva) mentioned from the R̥gveda to the Arvachin literature. Earth is the habitation and basis of the life of all the creatures, animals, the root, animate, movable, and immovable, etc. All creatures of nature live their lives on this. It has been designated as a mother. Earth is known by names like Dhara, Vasundhara, Rantagarbha etc. We get food, fruits, herbs, gems, and metals from the earth. Therefore, it is our duty to maintain its cleanliness and fertility by preventing land erosion and protecting it. 3-R (Reduce, Reuse, and Recycle) is helpful in this.

The word “Prithvi” (Earth) is originated on being suffix ‘shivan’ (eve) and ‘deesh’ (e) from the word ‘prathate iti Prithvi’ ‘prath prakhyaane’. Earth is called earth because it is extended. There are twenty-one (21) synonyms of the earth in ‘Nighantu’. Gau, Rama, Jema, kshma, ksha, kshama, kshauni, Kshiti, Avni, Urvi, Prithvi, Mahi, Rip, Aditi, Ila, Nirvite, bhoo, bhoomi, Poosha, Gatu, Gotra.





अध्याय 4 भूमि - संरक्षण

पंच तत्त्वों में पृथिवी तत्त्व की भी अन्य तत्त्वों की भाँति ऋग्वेद से लेकर अर्वाचीन साहित्य तक अनेक प्रकार से प्रार्थनाएँ एवं विशेषताएँ प्राप्त होती हैं। समस्त जीव, जन्तु, जड़ चेतन, चल, अचल आदि सभी का पृथ्वी ही निवास एवं जीवन का आधार है। समस्त प्राणी या प्रकृति इसी पर अपनी जीवन लीला करती है। इसे माँ की संज्ञा से अभिहित किया गया है। यह भूमि, धरा, वसुन्धरा, रत्नगर्भा आदि नामों से भी जानी जाती है। अन्न, फल, ओषधि, रत्न, धातु जलादि सब पृथ्वी से ही प्राप्त होते हैं। इसलिए इसकी स्वच्छता एवं उर्वरता बनाये रखना इसके क्षरण आदि को रोकना इसका संरक्षण करना सबका परम कर्तव्य है। 3-आर (रिड्यूस, रीयूज, रीसाइकल) इसमें सहायक है।

‘प्रथते इति पृथिवी’ ‘प्रथ प्रख्याने’ धातु से षिवन् (इव) प्रत्यय, एवं डीष् (ई) होने पर पृथिवी शब्द बना है। पृथिवी को पृथिवी इसलिए कहते हैं क्योंकि यह फैली हुई है। निघण्टु में पृथिवी के इक्कीस (21) पर्यायवाची शब्द हैं। गौः, रमा, ज्मा, क्षमा, क्षा, क्षमा, क्षौणी, क्षितिः, अवनि, उर्वी, पृथिवी, मही, रिपः, अदितिः, इळा, निऋतिः, भूः, भूमिः, पूषा, गातुः, गोत्रा ।





Yad dūraṃ gatā bhavati, yaccāsyāṃ bhūtāni gacchanti/ Nirukta 2.2

Earth is also known as Cow 'Gau' because it is extended far away. On which the creatures, substances etc. take shelter.

- Niṛtir-niramaṇāt, niḥśeṣeṇa ramante.ayāmiti niṛtiḥ/ Nirukta 2.2.

On which people travel or celebrates is called 'nishriti'.

Mātābhūmiḥ putro.ahṃ pṛthivyāḥ parjanyaḥ pitā sa u naḥ pipartuḥ/ Atharvaveda 12. 1. 12

Earth has got the rank of a mother and cloud a father. They are our guardians.



There are many different forms of earth. It includes forests, mountains and natural resources and minerals. The earth is prosperous in all respects. We can live a happy life using the resources staying on it.

**Girayaste parvatā himavantaṛaṇayaṃte pṛithivi syonamastu/ babhru kṛṣaṇāṃ rohiṇīṃ
viśvarūpāṃ dhruvāṃ bhūmiṃ pṛthivīmindraguptām/ ajīto.ahato akṣato.adhyaṣṭhām
pṛthivīmaham/ Atharvaveda 12. 1. 11**

A prayer has been offered to the earth: Oh Earth! Lovely by the hills, snow-covered peaks and jungles; Oh bountiful colour, safe Earth by gallants! On this earth, I live a happy and respectful life, unconquered and unhurt.





यद्दूरं गता भवति, यच्चास्यां भूतानि गच्छन्ति। निरुक्त 2.2

पृथिवी को गो भी कहते हैं क्योंकि यह दूर तक गई है। इस पर प्राणी, पदार्थ आदि गमन करते हैं।

निऋतिर्-निरमणात्, निःशेषेण रमन्तेऽयामिति निऋतिः। निरुक्त 2.2.

जिस पर लोग पूर्णतया रमते हों या आनन्द मनाते हों उसे निऋति कहते हैं।

माताभूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः पर्जन्यः पिता स उ नः पिपर्तु। अथर्ववेद 12.1.12

पृथिवी को माता का एवं पर्जन्य को पिता का स्थान प्राप्त है। यही हमारे पालक हैं।

पृथिवी के विविध रूप हैं। यह वन, पर्वत एवं प्राकृतिक संसाधनों एवं खनिज पदार्थों से युक्त है। पृथिवी हर प्रकार से समृद्ध है। इस पर स्थिर रहते हुए संसाधनों का उपयोग करते हुए सुखद जीवन जीने की कामना की गयी है।

गिरयस्ते पर्वता हिमवन्तोरण्यं ते पृथिवि स्योनमस्तु। बभ्रु कृष्णां रोहिणीं विश्वरूपां ध्रुवां भूमिं
पृथिवीमिन्द्रगुप्ताम्। अजीतोऽहतो अक्षतोऽध्यष्ठां पृथिवीमहम्। अथर्ववेद 12.1.11

पृथिवी से प्रार्थना की गयी है हे पृथिवी! तुम्हारा जो पर्वत भाग है, बर्फ से ढका पर्वत है जो कृषि योग्य स्थान है, जो वृक्षों एवं वनस्पतियों के लिए उपयुक्त स्थान है अनेक रंगों से युक्त है। वीरों से रक्षित है ऐसी माँ पृथिवी पर क्षतिरहित रहता हुआ अधिष्ठाता बनकर सम्मान से जीवन जी सकूँ।





The way a mother fulfils all the needs of her child and protects her, the same way earth too fulfils all the needs of its creatures. All kinds of livelihood sources are obtained from the earth. In the same way, it becomes the duty of human beings to protect the earth. They should not harm it in any way. Only then the fertility of the earth will sustain and the well-being of the human beings will happen. The pollution on earth can be prevented only by using 3-R (Reduce, Reuse and Recycle) methods.

**Yat te bhūme vikhanāmi kṣiprṃ tadapi rohatu/ mā te marma vimugvari mā te
hṛdayamarpipam/ Atharvaveda 12. 1. 35**



By adopting the 3-R method, minimum resources will be used and the quarantine of the earth will not happen. Similarly, conservation of earth/land may happen which is the need of the hour. We must fill the quarrying part of the earth immediately.

The lifestyle of our Indian saints and ancestors was such that conservation of nature could have been achieved automatically. 3-R was the part of their life. They utilized every item. There was no such problem of any kind of pollution. The 3-R method is effective and is an ideal solution to resolve present days problems.



From the Vedic rishis to the modern day's poets and intellectuals have emphasized this. They explained in detail about Geo-protection elements.





जिस प्रकार माँ अपने बच्चे की हर प्रकार की आवश्यकताओं की पूर्ति करती है उसकी सुरक्षा करती है उसी प्रकार पृथिवी भी समस्त प्राणियों की आवश्यकताओं की पूर्ति करती है। पृथिवी से ही समस्त प्रकार के जीविकोपार्जन के साधन प्राप्त होते हैं। इसी प्रकार मानव का भी कर्तव्य है कि पृथिवी का भी हर प्रकार से संरक्षण करे। उसकी किसी प्रकार से क्षति न करे। उसके मर्म स्थलों को क्षति न पहुँचाए। तभी पृथिवी की उर्वरा शक्ति आदि अनवरत रहेगी और सभी का कल्याण होता रहेगा। 3-आर लघूकरण (रिड्यूस), पुनरुपयोग (रीयूज), पुनश्चक्रण (रिसाइकल) पद्धति के द्वारा फलरूप में पृथिवी पर होने वाले प्रदूषण को दूर किया जा सकता है।

यत् ते भूमेविखनामि क्षिप्रं तदपि रोहतु। मा ते मर्म विमृग्वरि मा ते हृदयमर्पिपम्। अथर्ववेद 12.1.35

3-आर विधि का उपयोग करने से कम से कम संसाधन का प्रयोग होगा और बार-बार संसाधन के लिए पृथिवी का उत्खनन आदि नहीं होगा। इस प्रकार भी भूमि का संरक्षण हो सकता है जिसकी वर्तमान में महती आवश्यकता है। पृथिवी के उत्खनित भाग को शीघ्र भर देना चाहिए।

भारतीय मनीषियों एवं पूर्वजों की जीवनशैली इस प्रकार थी कि प्रकृति का संरक्षण फलरूप में हो जाता था।

3-आर उनके जीवन का अंग था। वे किसी भी वस्तु का सदुपयोग करते थे। किसी प्रकार प्रदूषणादि की समस्या उत्पन्न ही नहीं होती थी। वर्तमान समस्याओं के समाधान हेतु 3-आर पद्धति प्रभावकारी एवं कल्याणकारी है।

वैदिक ऋषियों से लेकर वर्तमान समय तक के कवियों एवं बुद्धिजीवियों ने इस पर बल दिया है। भू-संरक्षक तत्त्वों को भी विस्तार से बताया गया है।





Satyam bṛhadṛtamugraṃ dīkṣā tapo brahaṃ yajñah pṛthivīṃ dhārayanti/

sā no bhūtasya bhavyasya patnyurum lokam pṛthivī naḥ kṛṇaotu// Atharvaveda 12. 1. 1

Great (Brihat) truth, formidable right, consecration, penance, Brahman sacrifice (yajña) sustain the earth; let her for us, the mistress of what is and what is to be-let the earth make for us wide place (Loka). It is possible to protect the earth and environment protection if we follow Reduce-Reuse-Recycle, only then uninterrupted hygiene will also be maintained. Thus, we should always be cautious of soil-erosion and earth conservation and should make others also alert so that pure air, pure water, and pure environment is always available. Conservation was inherent in the lifestyle of Indian sages. They did not have to do anything special for that followed Reuse- Reduce-Recycle and Zero Waste Management were their methods. It is the duty of every human being to implement these plans and achieve the goal.

Asambādham badhyato mānavānām yasyām udvataḥ pravataḥ samaṃ bahu/

nānavīryā ośadhīryā vibharti pṛthivī naḥ prathatām rādhyatām naḥ// Atharvaveda 12. 1. 2

All human and other living things stay alive and healthy due to earth. We get many types of herbs and foodstuff, water, air, etc. from the earth. We get abundance from the elevated, bottom, and flat terrains of the earth. Therefore, it is the duty of every human being to protect the earth and its quality. Being indifferent from this duty means to keep us in danger. Thus, the ultimate goal should be to make and implement the plan for its conservation and adopting 3-R method is our prime objective so that environmental conservation can be done along with conservation of earth.





सत्यं बृहदृतमुग्रं दीक्षा तपो ब्रह्म यज्ञः पृथिवीं धारयन्ति ।

सा नो भूतस्य भव्यस्य पत्न्युरुं लोकं पृथिवी नः कृणोतु ॥ अथर्ववेद 12.1.1

अटल सत्यनिष्ठा, प्राकृतिक नियम यथार्थ ज्ञान, तप, यज्ञ दक्षता, त्याग ये गुण या तत्त्व पृथिवी का पालन पोषण एवं संरक्षण करते हैं। भूत, भविष्य एवं वर्तमान के पदार्थों का पालन करने वाली भूमि हमें विस्तृत स्थान प्रदान करे। लघूकरण (रिड्यूस), पुनरुपयोग (रीयूज), पुनश्चक्रण (रीसाइकल) का भी इन तत्त्वों की भाँति उपयोग करने से प्रतिफलित भूमि-संरक्षण एवं पर्यावरण-संरक्षण सम्भव है, तभी निर्बाधगति से स्वच्छता भी बनी रहेगी।

असंबाधं मध्यतो मानवानां यस्यां उद्वतः प्रवतः समं बहु ।

नानावीर्या ओषधीर्या विभर्ति पृथिवी नः प्रथतां राध्यतां नः ॥ अथर्ववेद 12.1. 2

भूमि के कारण ही समस्त मानव एवं मानवेतर प्राणी जीवित एवं स्वस्थ रहते हैं। रोगों को दूर करने वाली अनेक प्रकार की ओषधियाँ, जल, वायु भोजनादि, पृथिवी से ही प्राप्त होते हैं। ऊँचे, नीचे एवं समतल प्रदेशों वाली पृथिवी से ही सब समृद्ध होते हैं। अतः भू-संरक्षण एवं इसकी गुणवत्ता को बनाये रखना प्रत्येक मानव का कर्तव्य है। इस कर्तव्य से च्युत होने का तात्पर्य अपने को ही संकट में डालना है। अतः इसके संरक्षण के लिए योजना बनाना एवं कार्यान्वित करना एवं 3-आर विधि को अपनाना परम लक्ष्य होना चाहिए जिससे भू-संरक्षण के साथ-साथ पर्यावरण-संरक्षण भी हो सके।





Ṙṥhivīm dṛhaṃ, ṣṥhivīm mā hiṃsīaḥ/ Yajurveda 13. 18

The earth should not be damaged, it should be reinforced.

Upasthāste anamīvā ayakṣmā asamabhyaṃ santu ṣṥhivī ṣṥsūtāḥ/

dīrgha na āyuaḥ ṣṥtibudhyamānā vayaṃ tubhyaṃ baliḥṛtaḥ syāma/ Atharvaveda 12. 1. 62

May all the people born on earth be free of all diseases and tuberculosis; all should live long and be knowledgeable and protect the land in all respects by leaving asides their personal interests.

Ṕārthivā divyāḥ ṣṥśavaḥ āraṇayā uta ye mṛgāḥ/

Śakuntān ṣṥkṣiṇao brūmaste no muṃcantvaṃ hasaḥ/ Atharvaveda 11. 6. 8

Protection of other living things like animals and birds are also essential for environmental protection as they protect the human from distress and are helpful in conserving the environment.

Yat piṇḍe tat brahmaṇḍe. There is the same element exists in the universe which is in our body. Tulsi Das Ji has also said this same thing.

**Chiti jala ṣṥāvaka gagna samīrā/ Ṕaṃca racita yaha adhama sarīrā// Tulasīdāsa,
rāmacaritamānasa**

This mortal body is made of five elements such as earth, water, light, air and sky. There is also a fraction of the earth in this body. So, preserving the earth is to preserve our body.





आवासन और शहरी
कार्य मंत्रालय
भारत सरकार



पृथिवीं दृंह, पृथिवीं मा हिंसीः। यजुर्वेद 13.18

पृथिवी को क्षति नहीं पहुँचानी चाहिए इसे पुष्ट करना चाहिए।

उपस्थास्ते अनमीवा अयक्ष्मा असमभ्यं सन्तु पृथिवी प्रसूताः।

दीर्घ न आयुः प्रतिबुध्यमाना वयं तुभ्यं बलिहृतः स्याम। अथर्ववेद 12.1.62

पृथिवी पर उत्पन्न सब लोग रोग रहित एवं क्षयरोग रहित हों सब दीर्घजीवी एवं ज्ञानी हों और अपने निजी स्वार्थ का परित्याग कर भूमि का सब प्रकार से संरक्षण करें।

पार्थिवा दिव्याः पशवः आरण्या उत ये मृगाः।

शकुन्तान् पक्षिणो ब्रूमस्ते नो मुंचन्त्वं हसः॥ अथर्ववेद 11.6.8

पर्यावरण-संरक्षण के लिए मानवेतर पशु-पक्षी का भी संरक्षण आवश्यक है क्योंकि ये मानव को कष्ट से बचाते हैं एवं पर्यावरण को सुरक्षित करने में सहायक होते हैं।

यत् पिण्डे तत् ब्रह्माण्डे जो तत्त्व शरीर मे है वही ब्रह्माण्ड में है। तुलसीदास जी ने भी इसी बात को कहा है।

छिति जल पावक गगन समीरा। पंच रचित यह अधम सरीरा॥ तुलसीदास, रामचरित मानस

पृथ्वी, जल, तेज, वायु, आकाश इन पंचतत्त्वों से यह नश्वर शरीर बना है। इस शरीर में भी पृथिवी का अंश है।

अतः भूमि का संरक्षण करना अपने शरीर का संरक्षण करना है।





**Sūryo me cakṣurvātaḥ prāṇao. antarikṣamātmā pṛthivī śarīram/
astrto nāmāhamayamasmi sa ātmānaṃ ni dadhe dyāvāpṛthivībhyāmaṃ gopīthāya/
Atharvaveda 5. 9. 7**

Therefore, everyone's protection lies in the protection of the earth. Vedic sages speak of offering their soul for the protection of the earth.

Hazari Prasad Dwivedi also spoke about the protection of earth in 'Kutaj'.

This earth is my mother, I am her son. So I respect it. 'Kutaj'.

Later authors like Kabir, Tulsi, Jayshankar Prasad, Sumitranandan Pant, Nirala, Mahadevi Verma, Ramdhari Singh 'Dinkar' etc. have also spread awareness among the masses to keep the environment safe. Jai Shankar Prasad has also pointed out the wrath of nature.

**Prakṛti rahī durjeya parājita hamasaba bhūle the mada meṃ,
bhole the haṅ tirate keval saba mila vilāsītā ke mad meṃ/
ve saba ḍūbe-ḍūbe unakā vibhava bana gayā pārāvāra,
umada rahā thā deva sukhona para duakha jaladhi kā nāda apāra// Kāmāyanī**

The occurrence of crisis is likely to happen due to soil erosion and earth-pollution such as excessive rainfall, lack of rainfall, destruction of energy sources, loss of fertility and disturbance in sea etc.





सूर्यो मे चक्षुर्वातः प्राणोऽन्तरिक्षमात्मा पृथिवी शरीरम् ।

अस्तृतो नामाहमयमस्मि स आत्मानं नि दधे द्यावापृथिवीभ्यामं गोपीथाय । अथर्ववेद 5.9.7

इसलिए प्रकृति की सुरक्षा में ही सबकी सुरक्षा निहित है। वैदिक ऋषि पृथिवी की सुरक्षा के लिए अपनी आत्मा अर्पित करने की बात करता है।

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने भी अपने कुटज नामक निबन्ध में पृथिवी के संरक्षण की बात कही है।

यह धरती मेरी माता है मैं इसका पुत्र हूँ। इसलिए मैं इसका सम्मान करता हूँ। कुटज

कबीर, तुलसीदास, जयशंकर प्रसाद, सुमित्रानन्दन पंत, निराला, महादेवी वर्मा, रामधारी सिंह 'दिनकर' आदि परवर्ती रचनाकारों ने भी पर्यावरण को सुरक्षित रखने के लिए जन मानस में जागरूकता फैलायी है। जयशंकर प्रसाद ने प्रकृति के कोप की ओर भी संकेत किया है।

प्रकृति रही दुर्जेय पराजित हम सब भूले थे मद में,
भोले थे हाँ तिरते केवल सब मिल विलासिता के मद में।

वे सब डूबे-डूबे उनका विभव बन गया पारावार,

उमड़ रहा था देव सुखों पर दुःख जलनिधि का नाद अपार।। कामायनी

भू-क्षरण एवं भू-प्रदूषण से अत्यधिक वर्षा होना, वर्षा का न होना, उर्जा स्रोतों का नष्ट होना, उर्वरता नष्ट होना एवं समुद्रादि प्रभावित होना आदि संकट उत्पन्न होते हैं।





Mā no mātā pṛthivī durmatau dhāt // Ṛgveda 5-43-15

Therefore, keeping no grudges on earth is recommended. It is always said to protect the earth.

We should always be cautious of soil-erosion and earth conservation and should make others also alert so that pure air, pure water, and pure environment could be obtained. Conservation was inherent in their lifestyle of Indian sages and they did not have to do anything special for that but Reuse- Reduce-Recycle and Zero Waste Management are the best plans for this. It is the duty of every human being to implement these plans and achieve the goal. Due to pompom of modernism, deviations came for some time, but it is never too late to learn, and now all people are awakened, and working hard to make the concept of clean India successful which is the base of our age-old Indian heritage. Reduce, Reuse and Recycle and full use and zero waste management is the best method for this. It is the duty of every human being to achieve this goal by implementing this method.





आवासन और शहरी
कार्य मंत्रालय
भारत सरकार



मा नो माता पृथिवी दुर्मतौ धात् । ऋग्वेद 5.43.15

अतः माता पृथिवी से किसी प्रकार का द्वेष न करने की बात की गयी है। सदा ही इसके संरक्षण की बात कही गयी है।

अतः भू-संरक्षण एवं पर्यावरण-संरक्षण के प्रति स्वयं सजग रहना चाहिए एवं दूसरों को भी सजग करना चाहिए जिससे शुद्ध वायु, शुद्ध जल, एवं शुद्ध वातावरण प्राप्त हो सके। भारतीय मनीषियों की जीवनशैली में भूमि-संरक्षण निहित था इसके लिए उन्हें अलग से कुछ नहीं करना पड़ता था। परन्तु आधुनिकता के आडम्बर के कारण कुछ समय के लिए भटकाव आ गया, परन्तु जभी जागो तभी सवेरा अब फिर से समस्त लोग जग गये हैं, और अपनी भारतीय विरासत को आधार बनाकर स्वच्छ भारत की परिकल्पना को साकार करने के लिए प्रयत्नशील हैं। लघुकरण (रिड्यूस), पुनरुपयोग (रीयूज) पुनश्चक्रण (रीसाइकल) एवं पूर्ण प्रयोग एवं शून्य अपशिष्ट प्रबन्धन (जीरो वेस्ट मैनेजमेण्ट) इसके लिए उत्तम विधि है। प्रत्येक मानव का यह कर्तव्य है कि इस विधि को क्रियान्वित कर लक्ष्य को प्राप्त करें, जिससे सकल मनुष्यता सुखी हो सके।





Chapter 5

Environmental Protection in Indian Tradition



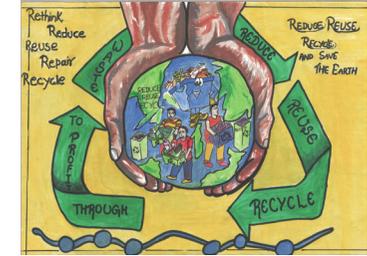


आवासन और शहरी
कार्य मंत्रालय
भारत सरकार



अध्याय 5

भारतीय परम्परा में पर्यावरण संरक्षण





Chapter 5 Environmental Protection in Indian Tradition

Environmental protection has now become an important subject of debate across the world. The environment is derived from the combinations of Pari+Ā prefix and covered by (Vri) Root & Lyut suffix the meaning of which is covering all around. This is an extensive word, it is the element environment which cover all around us with static, moveable and the whole universe. The entire nature of nature is the environment. Our Vedic sages were awakened towards five Mahabhuts (five elements). They came out with many creative solutions and stressed special focus on the purity of earth, water, air etc. In the Vedas, a well-organized lifestyle is provided for systematic operation of the nature-based environment. They used to adopt the 3-R methods in their life, they did not waste any products, used them fully and that is the Indian tradition. Vedas are the original sources of knowledge. Are miraculous, continual, eternal, absolute and universal, and is useful for the welfare of human and other living things of the entire world. Which can be called the constitution of God's or nature's constitution/order. Vedas are the vital scriptures of Indian culture and tradition, which are the trendsetters of human beings beyond geographical boundaries. The mantra seer sages treat all living being and substances as a part of nature and always talks about using nature's resources with the grateful approach and not to pollute it and to always propagate it to maintain its balance. The sages wish for peace and equality everywhere.

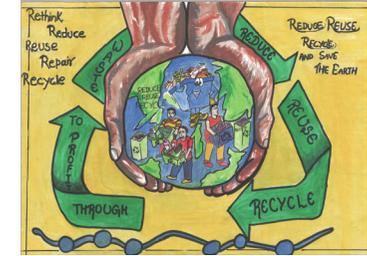




अध्याय 5

भारतीय परम्परा में पर्यावरण संरक्षण

पर्यावरण-संरक्षण वर्तमान समय में सम्पूर्ण विश्व का विषय बना हुआ है। पर्यावरण परि+आ उपसर्ग पूर्वक वृ आवरणे ल्युट् प्रत्यय से निष्पन्न है जिसका तात्पर्य है अच्छी तरह से चारों तरफ से ढकना। यह शब्द व्यापक है हमारे चारों तरफ के साथ-साथ चल, अचल एवं सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड को आच्छादित करने वाला तत्त्व पर्यावरण है। प्रकृति का सम्पूर्ण स्वरूप पर्यावरण है। वैदिक ऋषि पंच महाभूतों के प्रति सजग थे। उन्होंने अनेक सृजनात्मक मार्ग प्रदर्शित किये और पृथिवी, जल, वायु आदि की शुद्धता पर विशेष बल दिया। वेदों में प्रकृति रूपी पर्यावरण के व्यवस्थित संचालन हेतु एक सुव्यवस्थित जीवनशैली प्रदान की गयी है। वैदिक पूर्वज 3-आर (रिड्यूस, रीयूज, रीसाइकल) विधि को जीवन में अपनाते थे किसी भी वस्तु को अपशिष्ट (वेस्ट) नहीं होने देते थे उसका पूर्ण प्रयोग करते थे यही भारतीय परम्परा रही है। वेदों में भी इसके बीज प्राप्त होते हैं। वेद ज्ञान के आदि स्रोत हैं। अपौरुषेय, नित्य, शाश्वत, निरपेक्ष और सार्वभौमिक हैं एवं सम्पूर्ण जगत् के मानव एवं मानवेतर सभी प्राणियों के कल्याण के लिए उपयोगी हैं। जिसे ईश्वर या प्राकृतिक व्यवस्था का संविधान कह सकते हैं। वेद भारतीय संस्कृति, परम्परा के प्राणभूत ग्रन्थ हैं, जो भौगोलिक सीमाओं से परे मानव के पथ प्रदर्शक हैं। मन्त्र द्रष्टा ऋषि समस्त जीव और पदार्थों को प्रकृति का अंग मानते हुए प्रकृति के प्रति कृतज्ञ भाव से उसके उपादानों का उपयोग करने एवं प्रदूषित न करने एवं संतुलन बनाये रखने की बात करते हैं। ऋषि सर्वत्र शान्ति एवं साम्यावस्था की कामना करते हैं।





**Dyauḥ śāntirantarikṣaḥ śāntiḥ pṛthivī śāntirāpaḥ śāntiroṣadhayaḥ śāntiḥ/
Vanaspatayaḥ śāntirviśvedevāḥ śānti bahmaśāntiḥ sarvaḥ śāntiḥ śāntirev śāntiḥ sā mā
śāntiredhiḥ// Yajurveda 36. 17**

The heaven, space, the earth, the water, the herbal vegetation, the universe, the Brahma, all remain in peace and provide us peace. Even peace itself be peaceful. This noble feeling remained.

Atastvaḥ deva vanaspate śatavalśo viroha sahasravalśā vivayamaruhem/ Yajurveda 5. 43

It was prescribed in Vedas to cut only dry tree and it also talked about planting hundreds of trees.

Daśakūp samāvāpī daśavāpī samodrumaḥ/

Daśadrum samaḥ putraḥ daśa putra samo drumāḥ//

Trees are also considered to be deities. In Matsyapuran, one tree is considered to be as useful as ten sons.

Awareness of environment was always visible in the Indian culture and the concept of 3-R (Reduce, Reuse and recycle) is very ancient in Indian culture. It has been in use in some form or other since ancient times. 3-R (Reduce, Reuse and Recycle) is a major feature of Indian culture. It is mixed with our lifestyle. Since the ancient times, our ancestors have been taking advantage of reusing products. Indian feels their ultimate duty to use physical and natural resources as per their requirement and not to waste them and to preserve the environment. This is indeed the Indian tradition.





आवासन और शहरी
कार्य मंत्रालय
भारत सरकार



द्यौः शान्तिरन्तरिक्षं शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोशधयः शान्तिः । वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः
शान्तिः ब्रह्म शान्तिः सर्वं शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि ॥ यजुर्वेद 36.17

द्युलोक, अन्तरिक्ष लोक, पृथ्वी, जल, ओषधियाँ वनस्पतियाँ, विश्वेदेवा, ब्रह्म, सभी शान्त हों एवं शान्ति प्रदान करें।
यहाँ तक कि शान्ति भी शान्तिमय हो। यह आदिकाल से ही भारत की उदात्त भावना रही है।

अतस्त्वं देव वनस्पते शतवल्शो विरोह सहस्रवल्शा विवयमरुहेम् । यजुर्वेद 5.43

वेदों में एक सूखा वृक्ष काटने की बात कही गयी है तो सैकड़ों वृक्ष लगाने की बात भी कही गयी है।

दशकूपसमा वापी दशवापीसमो द्रुमः ।

दशद्रुमसमः पुत्रः दशपुत्रसमो द्रुमः ॥

वृक्षों को देवस्वरूप भी माना गया है। मत्स्यपुराण में दस पुत्रों के समान एक वृक्ष माना गया है।

भारतीय संस्कृति में पर्यावरण के प्रति सर्वदा से ही सजगता दृष्टिगोचर होती है भारतीय संस्कृति में 3-आर (रिड्यूस (लघुकरण), रीयूज (पुनरुपयोग), रीसाइकल (पुनश्चक्रण) की अवधारणा बहुत ही प्राचीन रही है। प्राचीन काल से वर्तमान समय तक इसका प्रयोग किसी न किसी रूप में होता आ रहा है। 3-आर (रिड्यूस, रीयूज, रीसाइकल) भारतीय संस्कृति की प्रमुख विशेषता है। संस्कृति का प्रमुख अंग है। यह भारतीय जीवनशैली में रचा बसा है। भारतीय प्राचीन काल से ही वस्तुओं का सदुपयोग, पुनरुपयोग एवं पुनश्चक्रण करते आ रहे हैं। भौतिक एवं प्राकृतिक संसाधनों का आवश्यकतानुसार उपयोग करना एवं अपव्यय न करना एवं पर्यावरण को संरक्षित करना भारतीय अपना परम कर्तव्य समझते हैं। यही भारतीय परम्परा है।





It was a part of our life to use more of wooden and clay products received from nature and this tradition is still visible. Making a small furniture out of a damaged bigger one, making a wooden spoon, a ladle, a sow, etc. and used wood for other things or for preparing food etc. had been in practice since ancient times. Making small dresses once bigger dresses are torn, using woollens and similar clothes as a mattress is practiced even today. Mats, bedding, carpet, warm dresses are made from woollen material. Cotton material is being recycled many a time. Used old clothes are remade as bags etc. Emphasis is given on using cotton clothes. *Tantuṃ tataṃ saṃvayantī. R̥gveda 2-3-6*, one which dissolves in the earth after coming into contact with soil without creating pollution. For the making of rope etc., Flax, Walnut, Basil, Cass, Grass, Myosotis, Straw, Jute Coconut etc. is being used. All this can be done in the house and it can be seen even today somewhere. One which becomes compost in the earth after use.

Sūtrādhyakṣaḥ sūtravarmavastrarajjuvyavahāraṃ tajjātapuruṣaiḥ kārayet/

Ūrṇāvalkakārpāsātūlaśaṇākṣaumāni.....kartayet/ kauṭilīya arthaśāstram 2. 23. 1-2

In the scriptures, the description of the weaver's deeds is found. For yarn, cloth, rope etc., there is mention of determining wages and rewards to spin cotton, flax and jute etc.





लकड़ी एवं मिट्टी जैसे साक्षात् प्रकृति से प्राप्त वस्तुओं का ही अधिकाधिक उपयोग करना भारतीयों की जीवनशैली में था। यह परम्परा आज भी दृष्टिगोचर होती है। बड़े फर्नीचर के खराब होने पर उससे छोटी वस्तु जैसे स्टूल, चम्मच, कलछी, सुवा, पीढ़ा आदि बनाना एवं उपयोग की हुई लकड़ी का अन्य रूप में उपयोग करना या भोजन बनाना आदि द्वारा पुनरुपयोग (रीयूज) होता आ रहा है। बड़े कपड़े के फटने पर उससे छोटे कपड़े बनाना, ऊनी कपड़ों आदि का गद्दे आदि में प्रयोग करना भारतीय समाज की सामान्य प्रवृत्तियों का अंग रहा है। ऊन से आसन, बिछौना, कालीन, गर्म कपड़े आदि बनाये जाते हैं। रुई का पुनरुपयोग (रीयूज) होता है। पुराने कपड़ों का उपयोग थैला आदि बनाने के काम में होता है। सूती कपड़ों पर बल दिया जाता रहा है। तन्तुं ततं संवयन्ती। ऋग्वेद 2.3.6 जो बाद में मिट्टी के सम्पर्क में आकर बिना प्रदूषण फैलाये पृथिवी तत्त्व में विलीन हो जाते हैं। रस्सी आदि के लिए सन, पटुआ, बकेट, कास, कुश, मूज, पुआल, जूट नारियल आदि का प्रयोग होता है। यह सब कार्य घर में भी होता था और कहीं-कहीं आज भी होते देखा जा सकता है। जो उपयोग के पश्चात् पुराना होने पर पृथ्वी में खाद बन जाता है।

सूत्राध्यक्षः सूत्रवर्मवस्त्ररज्जुव्यवहारं तज्जातपुरुषैः कारयेत् ।

ऊर्णावल्ककार्पासतूलशणक्षौमाणि.....कर्तयेत् । कौटिलीय अर्थशास्त्रम् 2.23.1-2

शास्त्रों में सूत्राध्यक्ष के कार्यों का वर्णन प्राप्त होता है। सूत, कपड़ा, रस्सी आदि के लिए ऊन, वल्क (वृक्ष की छाल), कपास, सेमल, सन, और जूट आदि को कतवाने वेतन निर्धारित करने एवं पुरस्कृत करने के कार्य का उल्लेख मिलता है।





The weaving of bedstead, stool etc. is being done from fibres (ropes) or batons. Fibres of bedstead can be used again for weaving stool or any other rope for further usage.

Prastareṇa barhiṣā. Yajurveda 18. 63

The use of cane grass (Kush) mat has been in use since ancient times on occasions of religious rituals. They decompose and become the part of earth by becoming manure after consumption and increase the yields of grains without creating pollution.



In Indian tradition on various occasions of our festivals, we serve food in plates made from leaves of Butea (Palash), lotus (Kamlapatra), Banana (Kadalipatra) Bassia Latifoli (Mahua) etc. which are subsequently dried and either used as a fertilizer and merged in the earth or used as a feed by animals. Thus they are being used completely (zero waste).

Śūrpagrāhī, kaṇāḥ gāvaḥ taṇḍulāḥ tuṣāḥ phalīkaraṇāḥ/ Atharvaveda 11. 3. 4-6





चारपाई, मचिया आदि की बुनाई तन्तुओं (रस्सियों) या बेत से होती आ रही है। चारपाई की रस्सी आदि का उपयोग पुनः मचिया आदि बनाने में किया जाता है या अन्य रस्सी के रूप में पुनरुपयोग (रीयूज) में लाया जाता है।

प्रस्तरेण बर्हिषा। यजुर्वेद 18.63

धार्मिक अनुष्ठानों के अवसर पर कुश की चटाई का प्रयोग प्राचीन काल से ही होता आ रहा है। जो प्रयोग के बाद पृथिवी का अंग बनकर बिना पर्यावरण में प्रदूषण फैलाये पृथिवी की उर्वराशक्ति को बढ़ाता है।

भारतीय परम्परा में समारोह आदि में भोजन परोसने हेतु पलाश, कमलपत्र, कदलीपत्र, महुआदि के पत्तों से बनी थाली का प्रयोग होता आ रहा है जो बाद में सूखकर या तो पृथिवी में खाद के रूप में प्रयोग होता है या पशु द्वारा भक्षित हो जाता है। जिसका पूर्ण उपयोग, (हन्ड्रेड परसेन्ट यूज), शून्य अपशिष्ट (जीरो वेस्ट) होता आ रहा है।

शूर्पग्राही, कणाः गावः तण्डुलाः तुषाः फलीकरणः। अथर्ववेद 11.3.4-6





Paddy or grain obtained from the crops is used and remains like straw, rind and paira is fed to cow etc. This is the Indian tradition. From this we get milk, ghee and which is used in food and Yajña. Dung is used after drying for preparing food, which later increases the yield of farms in the form of manure. Since it is reused and there is no waste (zero waste) and environment is not polluted. It improves and protects our health by providing chemical-free food. Coating of cow-dung in Yajña's earth and houses kills germs. There is a provision of Yajña in our Indian culture and tradition, which is being followed even at the present time. Yajña is the best medium for environment protection. Contact of Yajña wood with fire, ghee and incense burners increases its capacity which purifies the surrounding environment. The subtle have more impact than the physical. Ghee, Yajña wood and the power of the incense burners increases its capacity many times when it comes in contact with fire. Trees get energy from Yajña. Due to the use of Yajña ash, barren and unfertile land begin to become fertile by using ashes of Yajña. Performing Yajña is also helpful in bringing rain. It is also helpful in protecting the ozone layer.

**Āpovatsaṃ janayantīrgarbhmagre samairayana/ tasyota jāyamānasyolba
āśiddhiraṇayayaḥ kasmai devāya haviṣā vidhema/ Atharvaveda 4. 2. 8
Mahat tadulbaṃ sthaviraṃ tadāsīd yenāviṣṭitaḥpraviveśithāpaḥ / Ṛgveda 10.51.1**





आवासन और शहरी
कार्य मंत्रालय
भारत सरकार



फसलों से प्राप्त धान या अन्न का प्रयोग किया जाता है एवं अन्य शेष भाग भूसा छिलका पैरा आदि को गौ आदि को खिला दिया जाता है। यही भारतीय परम्परा रही है। जिससे दूध, घी होता है जिसका प्रयोग भोजन एवं यज्ञ में किया जाता है। गोबर आदि का प्रयोग सुखाकर भोजन बनाने के काम आता है जो बाद में खाद के रूप में खेतों की पैदावार बढ़ाता है। पुनरुपयोग (रीयूज) एवं पूर्ण प्रयोग होने से शून्य अपशिष्ट (जीरो वेस्ट) होने से पर्यावरण प्रदूषित नहीं होता। रसायन रहित अन्न प्रयोग करने पर स्वास्थ्य पर अनुकूल प्रभाव पड़ता है। गोबर से यज्ञीय भूमि एवं गृह आदि का लेपन होने से कीटाणु आदि खत्म हो जाते हैं। भारतीय संस्कृति में प्राप्त यज्ञों की परम्परा आज के जीवन में भी बहुत महत्त्व रखती है। यज्ञ पर्यावरण-संरक्षण का श्रेष्ठ माध्यम है। यज्ञीय लकड़ी, (समिधा) घी एवं हव्य सामग्री के साथ अग्नि का सम्पर्क होने से इन सबकी शक्तियाँ बढ़ जाती हैं जो पर्यावरण की शुद्धि का अत्यन्त शसक्त माध्यम बनती हैं। कारण यह है कि स्थूल की अपेक्षा सूक्ष्म का प्रभाव अधिक होता है। यज्ञ से वृक्षों को भी ऊर्जा मिलती है। यज्ञीय राख के प्रयोग से बंजर एवं ऊसर भूमि भी उपजाऊ होने लगती है। यज्ञ जलवृष्टि में भी सहायक होता है। ओजोन परत की रक्षा में भी सहायक है।

आपोवत्सं जनयन्तीर्गर्भमग्र समैरयन् ।

तस्योत् जायमानस्योल्ब आसीद्धिरण्ययः कस्मै देवाय हविषा विधेम। अथर्ववेद 4.2.8

महत् तदुल्बं स्थविरं तदासीत् येनाविष्टितः प्रविवेशिथापः। ऋग्वेद 10.51.1





The ozone layer is called the great amnion, which is a thick layer which protects human and non-human creatures, earth and nature from the ultraviolet rays of the sun. The layer covered on the fetus (Membrane) is called the amnion. The ozone layer is said to be large and thick which protect the earth, in the same way, a baby is protected in the womb. Harming it means harming the earth and all creatures along with nature.

Dyausca tvā pṛthivī yajñiyāso / R̥gveda 3.6.3

Yajño vai śreṣṭhatamaṃ karm/ Śatapatha brāhmaṇa 1. 7. 3. 5

**Yajñen dviṣanto mitrā bhavanti yajñe sarva pratiṣṭhitama tasmād yajñam paramṃ vadanti/
Nārāyaṇaopaniṣada 79**



Yajña is also therapeutic. The social evils also decrease because of performing Yajña, because as people attain spiritual development inner enemies of the soul like greed, attachment, envy, sex, anger, greed, attachment, jealousy, arrogance, begrudge etc. either starts decreasing or are eliminated completely, and the inner friends of the sacred soul -- mercy, religion, wisdom, altruism, compassion, love and sense of duty etc. begin to rise. The mind becomes pure and sacred. The developed power allows us to see everyone like a friend. Heaven and Earth are called Yaghyiyas. And Yajña is called the supreme deed.

Ijyā phalasya bhūreṣā ijyā cātra pratiṣṭhitā// Viṣṇaupurāṇa 2. 7. 11

Sages gave us an omnipresent remedy for keeping the environment free from pollution. Earth is said to be a fruit of Yajña itself. Earth, water, sky, air and atmosphere is purified by performing Yajña. It is scientifically proven.





आवासन और शहरी
कार्य मंत्रालय
भारत सरकार



ओजोन परत को महत् उल्ब कहा गया है जो सूर्य की परा बैगनी किरणों से मानव तथा मानवेतर प्राणी, पृथिवी तथा उसकी प्रकृति की रक्षा करती है। गर्भस्थ शिशु के ऊपर ढकी हुई परत को उल्ब कहते हैं। पृथ्वी को गर्भस्थ शिशु की तरह रक्षा के लिए ओजोन परत को महान और स्थूल कहा गया है। इसे हानि पहुँचाना पृथ्वी एवं समस्त प्राणी तथा प्रकृति को हानि पहुँचाना है।

द्यौश्च त्वा पृथिवी यज्ञियासो। ऋग्वेद 3.6.3

यज्ञो वै श्रेष्ठतमं कर्म। शतपथ ब्राह्मण 1.7.3.5

यज्ञेन द्विषन्तो मित्रा भवन्ति यज्ञे सर्व प्रतिष्ठितम् तस्माद् यज्ञं परमं वदन्ति। नारायणोपनिषद् 79

यज्ञ रोगनाशक भी है। सामाजिक बुराइयाँ भी परिणामतः कम हो जाती हैं क्योंकि यज्ञ से व्यक्ति का आध्यात्मिक विकास भी होता है। व्यक्ति के अन्तस् के शत्रु लोभ, मोह, ईर्ष्या असूया, काम क्रोध, मद, मात्सर्य आदि कम या खत्म हो जाते हैं, एवं अन्तस् के मित्र दया, धर्म, ज्ञान, परोपकारिता, करुणा, प्रेम, कर्तव्यबोध आदि की वृद्धि होने लगती है। मन शुद्ध पवित्र एवं निर्मल हो जाता है। सबको मित्रवत देखने की शक्ति विकसित होती है। द्युलोक तथा पृथिवी को यज्ञियास, एवं यज्ञ को श्रेष्ठ कर्म कहा गया है।

इज्या फलस्य भूरेषा इज्या चात्र प्रतिष्ठिता।। विष्णुपुराण 2.7.11

ऋषियों ने प्रदूषण मुक्त रखने का एक प्रमुख सर्वव्यापी उपाय यज्ञ दिया है। पृथिवी को यज्ञ का ही फल बताया गया है। यज्ञ से पृथ्वी, जल, आकाश, वायु तथा वातावरण शुद्ध होता है। इसकी वैज्ञानिकता है।





**Yajñam ca nastanvaṃ ca prajāṃ cādityairindraḥ saha cīkṛpāti// Atharvaveda 20. 63. 1
yajñadānatapaḥ karma na tyājyaṃ kāryameva tat/**

Yajñodānaṃ tapaścaiva pāvanāni manīṣiṇām// Śrīmadbhagavadgītā 18. 5

One should not abandon Yajña, charity and deeds of austerity. Because all these three deeds purify wise peoples.

The 3-R method has been the basis of the happy life. Consuming juice extracted from sugarcane and using its rind after drying and then again using its ashes as manure in farms. Its ash also comes in use for cleaning utensils etc. Such description of sugarcane is also available in Vedas. Ekshuṇa. Atharvaveda 1-34-5] Ekshukaṇḍam. Mairāyanī 3-7-9] 4-2-9

Gold, silver other metals are being reused. The description of metal crafts and business and vivid use of ornaments are found.

**Kāṃcanā jalakumbhāśca bhadrapīṭhaṃ svalnkṛtam/ tasmai cābhyudyataṃ
samyakmaṇikāncanabhūṣitam// Vālmīki rāmāyaṇa, Ayodhyākāṇḍa 15. 4**

Gold, Silver, Bronze, Glass, Iron, Gold Vase, Mats, Jewellery etc. are unique examples of the artisan crafts. The concept of Reuse, Reduce, and Recycle is going on in these crafts from ancient times. The tradition of making new ornaments again and again after repeatedly melting it has been seen in practice since ancient times. It is the best example of the 3-R.





आवासन और शहरी
कार्य मंत्रालय
भारत सरकार



यज्ञं च नस्तन्वं च प्रजां चादित्यैरिन्द्रः सह चीक्लृपाति ।। अथर्ववेद 20.63.1

यज्ञदानं तपः कर्म न त्याज्यं कार्यमेव तत् ।

यज्ञो दानं तपश्चैव पावनानि मनीषिणाम् ।। श्रीमद्भगवद्गीता 18.5

यज्ञ, दान, और तपस्वरूप कर्म को कभी त्यागना नहीं चाहिए। क्योंकि ये तीनों कर्म मनीषियों को पवित्र करने वाले हैं।

3-आर पद्धति सुखमय जीवन का आधार रही है। गन्ने से रस निकालकर उपयोग करना तथा उसके छिलके (खोइया अथवा अपि श्ट) को सुखाकर भोजन बनाने के काम में लिया जाता है। उसकी राख को खेतों में खाद के रूप में प्रयोग किया जाता है। वह राख बर्तन आदि साफ करने के काम में भी आती है। इक्षुणा। अथर्ववेद 1.34.5 , इक्षुकाण्डम् ..। मैत्रायणी संहिता 3.7.9 , 4.2.9 गन्ने का वर्णन वेदों में भी प्राप्त होता है।

स्वर्ण चाँदी आदि धातुओं का पुनरुपयोग (रीयूज) किया जाता रहा है। धातुओं से सम्बद्ध शिल्प एवं आभूषणादि व्यवसायों का विशद वर्णन प्राप्त होता है।

कांचना जलकुम्भाश्च भद्रपीठं स्वलंकृतम् ।

तस्मै चाभ्युद्यतं सम्यक्मणिकांचनभूषितम् ।। वाल्मीकि रामायण, अयोध्याकाण्ड 15.4

स्वर्ण, रजत, कांस्य, शीशा, लोहा, कलश, आसन, आभूषणादि के शिल्पकारी के अनुपम उदाहरण हैं। धातुओं का लघूकरण, पुनरुपयोग, पुनश्चक्रण (रिड्यूस, रीयूज, रीसाइकल) की अवधारणा प्राचीन काल से वर्तमान काल तक चली आ रही है। आभूषण खराब होने पर उसे गलाकर पुनः वही या दूसरा आभूषण बनाने की यह परम्परा प्राचीन काल की भाँति वर्तमान में भी दृष्टिगोचर हो रही है। रत्नों का अनेक रूपों में प्रयोग किया जाता रहा है। 3-आर का यह उत्तम उदाहरण है।





People share books taking turns to read them one after another. It has been our tradition.

Paper is used for making basket, cardboard, etc. after processing. Clay pitchers and vessels are being used for storing water, milk, curd, ghee etc. The use of clay pitchers like utensils does not harm the environment. Cooking food in the raw clay fireplace and milk is boiled on small brazier (Gorsi). These later dissolves in the soil. There is no pollution and it is used fully and there is no waste.

Mats, fans, baskets etc. are made from bamboos, baton, reed, cane etc. which becomes part of nature after the consumption. Due to that, no pollution occurs. These days leaves, jute and compost fertilizers are being used predominantly in farming in place of chemical fertilizers.

R̥gveda 2. 14. 11, yavamiv sthivimyah/ Atharvaveda 20. 16. 3

Due to that, no pollution occurs. To keep food, the use of raw soil limekiln is being used.

Raw soil limekiln is being used for keeping food grains. Its use is still visible in our villages even today. Neem leaves are used for protection against germs. Neem leaves, legume, skin/bark, wood have the ability to eliminate many bacteria and diseases. Even today, many people clean their teeth with neem stick (Datun). To keep small things safe it is covered with gourd or pumpkin. Some communities use this even today. This is the way (zero waste) occurs. This is the way the 3-R is inherent in the lifestyles which proved helpful in making life easy and simple.





पुस्तकों का अध्ययन एक के बाद दूसरे लोग किया करते हैं। यह परम्परा रही है।

कागजादि को गलाकर उसकी टोकरी, गत्ता, दफ़ती आदि के रूप में पुनरुपयोग होता आ रहा है। मिट्टी का घड़ा आदि पानी, दूध, दही, घी रखने के काम में आता रहा है। मिट्टी के बर्तन आदि के प्रयोग से पर्यावरण को क्षति नहीं पहुँचती। मिट्टी के कच्चे चूल्हे भोजन बनाने एवं कच्ची गोरसी पर दूध पकाया जाता है। जो बाद में मिट्टी में मिल जाता है। इससे किसी प्रकार का प्रदूषण नहीं होता पूर्ण प्रयोग हो जाता है और कोई अपशिष्ट (वेस्ट) भी नहीं होता।

बाँस, बेट, नरकट, सरकण्डा आदि से चटाई, पंखा, टोकरी आदि बनाया जाता है जो प्रयोग के बाद प्रकृति का अंग बन जाते हैं। जिससे प्रदूषण नहीं होता। रासायनिक खादों की जगह पत्तों, सन आदि से बनी कम्पोस्ट खाद का प्रयोग होता आ रहा है।

ऋग्वेद 2.14.11, यवमिव स्थिविम्यः। अथर्ववेद 20.16.3

अन्न रखने के लिए कच्ची मिट्टी का ऊर्दर (कुठला, कुठली) पात्र का प्रयोग होता था। इसका प्रयोग वर्तमान में भी गाँवों में दिखाई पड़ता है। कीटाणुओं से बचाने के लिए नीम की पत्ती आदि का प्रयोग किया जाता है। नीम की पत्ती, फली, छाल, लकड़ी अनेक रोगों को समाप्त करने की क्षमता वाली होती है। कुछ लोग आज भी नीम की दातून से दाँत साफ किया करते हैं। छोटे सामान रखने हेतु लौकी के आवरण का कमण्डल बनाकर उपयोग किया जाता था। कुछ सन्तसमुदाय आज भी इसका उपयोग करते हैं। इस प्रकार शून्य अपशिष्ट (जीरो वेस्ट) होता है। इस प्रकार जीवनशैली में 3-आर निहित रही है जो जीवन को सहज सरल एवं सुगम बनाने में सहायक सिद्ध होती है।





Animals are fed with feed or water in the crib made of either wood or clay for repeated use. Droṇahāvaṃ Ṛgveda 10-101-7 There used to be a tub made of wood or clay in which animals were fed with fodder or water. These were reuseable and nature friendly plastic tubs used at present.

Śikyāni. Atharvaveda 9-3-6] A Chhika (Shikhar) is hanged at height to protect milk, curd, ghee etc. from cat is visible at few places at the same time. Surdas too described Chhika in his compositions. Shrikrishna says to his mother Yashoda --

**Maiyā morī mai nahim mākhan khāyo/
 mai bālak bahiyan ko choṭo chīko kehi vidhi pāyo/ Sūradāsa**

Chhika (Shikhar) too is made from the rope of buckle, flax or jute which is later used as a fertilizer after burning or even without burning. It becomes part of the earth and used in the form of manure without polluting the environment. This is practiced even nowadays in some places. Even those days the 3-R methods were fully used and this arrangement was going on with zero waste management. So, the 3-R has been a regular concept practiced in the lifestyles of Indians.

In olden days, there used to be a vessel in the shape of the tub made up of wood or clay. Mana cangā to kaṭhutī me gangā. 'If Mind is healthy then everything will be fine'. This is a popular proverb.

**Kevaṭa rāma rajāyasu pāvā / Pāni kaṭhautā bhari lai āvā// Rāmacarita mānasa,
 ayodhyā kāṇḍa**





द्रोणाहावम्। ऋग्वेद 10.101.7 लकड़ी या मिट्टी की नाद होती है जिसमें पशुओं को चारा खिलाया और पानी पिलाया जाता है। पुनरुपयोग (रीयूज) में लायी जाती है।

शिक्यानि। अथर्ववेद 9.3.6, बिल्ली से बचाने के लिए घी, दूध, दही आदि को छीका (शिकहर) पर ऊपर टाँग दिया जाता था यह आज भी कहीं-कहीं देखने को मिलता है। छीको का वर्णन सूरदास ने भी अपनी भक्ति रचनाओं में किया है। श्रीकृष्ण माता यशोदा से कहते हैं—

मैया मोरी मैं नहिं माखन खायो। ...

मैं बालक बहियन को छोटी छीको केहि विधि पायो। सूरदास

छीको भी बकेड़, सन या पटुआ के रस्सी का बनाया जाता है। जो बाद में खराब होने पर जलाकर खाद के रूप में प्रयोग किया जाता है या बिना जलाये ही पृथिवी का अंग बनकर खाद के रूप में काम में आता है। पर्यावरण को बिना प्रदूषित किये इसका पुनरुपयोग होता था। आज भी यह कहीं-कहीं देखने को मिल जाता है। 3-आर का प्रयोग होता था शतप्रतिशत उपयोग प्रबन्धन (हन्ड्रेड परसेन्ट यूज मैनेजमेण्ट), होता था कुछ भी अनुपयुक्त नहीं होता था। शून्य अपशिष्ट प्रबन्धन (जीरो वेस्ट मैनेजमेण्ट) से यह व्यवस्था चलती आ रही है। इस प्रकार 3-आर युक्त भारतीय जीवनशैली रही है।

कठौती या कठौता जो वर्तमान में टब के आकार का होता है यह भी लकड़ी का बनता था। मन चंगा तो कठौती में गंगा। यह लोकोक्ति भी प्रसिद्ध है।

केवट राम रजायसु पावा। पानि कठौता भरि लै आवा।। रामचरित मानस, अयोध्या काण्ड





Since it used to be made up of wood, after use it used to be burned or used to cook food and thereafter it was converted to ashes which would become part of the earth. Similarly, Comb also used to be made of wood for combing hair. The base of the mirror too used to be made up of wood. One can even see these things today. Chariots, bullock carts, horse carriage, sedan (palki), boat etc. were manufactured from wood. Spindle, spool, spinning wheel, and stubble to hang clothes were made up of wood. Musical instruments such as veena, dhol, nagada, tabala flute, harmonium (shamimai) mridang etc. were mostly manufactured from wood. The windows and doors were also made up of wood. Which can be reduced in size and reused. Since they were reused there was zero waste generation. Measuring vessels such as for measuring mustard oil were also made from wood, which is known as Pothi-Potha. It was used by oil vendors. Even measuring the length in meter or in feet i.e scales were made of wood. Sports goods like carom board, Bat, wicket, Tip Cat etc. are also made of wood. These are eco friendly material. So, this way earth was protected. Cent percent is consumed. Similarly, there are thousands of examples available of the 3-R method. Indian public had been utilizing the benefits of reduce, reuse and recycle methods ever since ancient times. Every Indian must follow this age-old Indian tradition as his duty even today.





काष्ठ से निर्मित होने के कारण यह पात्र प्रयोग के पश्चात् जलाने या भोजन बनाने के उपयोग में पुनः आता है, तत्पश्चात् राख बनकर पुनः खाद के रूप में खेतों की पैदावार में वृद्धि करता है। इस प्रकार इसका भी शतप्रतिशत प्रयोग (हन्ड्रेड परसेण्ट यूज) हुआ। बाल सवारने के लिए कंधी भी लकड़ी की होती थी। दर्पण का आधार (फ्रेम) भी लकड़ी का होता था। वर्तमान में भी यह कहीं-कहीं देखने को मिलता है। रथ, बैलगाड़ी, ताँगा, पालकी, नाव आदि की कारण सामग्री भी लकड़ी ही हुआ करती है। तकली, ढेरा, चरखा, एवं कपड़े टाँगने हेतु खूँटी भी लकड़ी की होती है। संगीत में प्रयुक्त होने वाले वीणा, ढोल, नगाड़ा, तबला बासुरी, हारमोनियम (शमीमयी) मृदंग आदि वाद्ययन्त्र अधिकांशतः काष्ठ से निर्मित होते हैं। खिड़की, दरवाजे, चारपाई, पालना आदि भी लकड़ी के बनाये जाते हैं। जिनका बाद में लघुकरण (रिड्यूस) एवं पुनरुपयोग (रीयूज) हो जाता है, और शून्य अपशिष्ट (जीरो वेस्ट) होता है। सरसो आदि के तेल को मापने के लिए लीटर भी लकड़ी का होता था जिसे पौठी, पौठा के नाम से जाना जाता है। जिसे तेलवाला प्रयोग करता है। लम्बाई मापने के लिए मीटर, फिट आदि में (स्केल) भी लकड़ी का प्रयोग होता आ रहा है। खेल सामग्री जैसे कैरम, बैट, बिकेट, गिल्ली, डण्डा आदि भी लकड़ी की बनी हुई होती है। यह सब प्रयोग के पश्चात् भोजन बनाने के काम में आती है और बाद में इसकी राख खाद के रूप में प्रयोग हो जाती है। इस प्रकार शून्य अपशिष्ट (जीरो वेस्ट) होकर यहाँ भी शत प्रतिशत प्रयोग हुआ। इसी प्रकार 3-आर के हजारों उदाहरण हैं। 3-आर लघुकरण (रिड्यूस) पुनरुपयोग (रीयूज), पुनश्चक्रण (रीसाइकल), विधि का प्रयोग भारतीय जनमानस सदा से करता चला आ रहा है। इस भारतीय परम्परा का पालन वर्तमान में भी अपना कर्तव्य समझकर सभी को करते रहना चाहिए।





Residual food had been used to provide daily feed for cows, ants, crows, and dogs. As a result of this residual food comes to utilized by other living beings. This practice ensures there will be no pollution and hundred percent consumption and no waste generation.

Na cocchiṣṭaṃ kuryāta/ Āpastamba dharmasūtra 1. 3. 37

Aśaktau bhūmau nikhāneta/ Āpastamba dharmasūtra 1. 3. 38

One should not dump food in the garbage. Optimal use of food reduces waste. If due to some reason, a person is not able to completely eat the available food or could not feed it to any animal then the next option is to bury the residual food in the earth. That will become a part of the earth and transform into compost and also ensure that there is no pollution.

The Indian medicine system of Ayurveda also had been utilizing environmental protection and 3-R (Reduce, Reuse and Recycle) phenomenon forever. A human can increase life expectancy and lead a longer life by protecting the environment and living healthy.

Paśyema śaradaḥ śataṃ/ jīvem śaradaḥśataṃ/ budhyem śaradaḥ śataṃ/

rohem śaradaḥ śataṃ pūṣema śaradaḥ śataṃ/ bhavema śaradaḥ śataṃ/

bhūṣema śaradaḥ śataṃ/ bhūyasīaḥ śaradaḥ śatāt/ Atharvaveda 19. 67. 1-8

Let us see a hundred years. Let us live hundred years, receive knowledge in 100 years, Grow hundred years, we become strong for hundred years. We live in the good state for hundred years. Live beyond hundred years. This happens only by using the 3-R method to reduce pollution.





आवासन और शहरी
कार्य मंत्रालय
भारत सरकार



दैनिक गो-ग्रास, पिपिलिका ग्रास, काक ग्रास, श्वान ग्रास के रूप में भारतीय मनुष्य प्रकृति के प्रति अपने कर्तव्य का निर्वाह किया करता था। यह प्रथा किसी सीमा तक आज भी विद्यमान है। यह भी भोजन के शतप्रतिशत प्रयोग का उदाहरण है।

न चोच्छिष्टं कुर्यात् । आपस्तम्ब धर्मसूत्र 1.3.37

अशक्तौ भूमौ निखनेत् । आपस्तम्ब धर्मसूत्र 1.3.38

भोजन को उच्छिष्ट नहीं छोड़ना चाहिए। जितना भोजन कर सकें उतना ही ग्रहण करना चाहिए। यदि किसी कारणवश सम्पूर्ण भोजन को न खा सकें एवं किसी अन्य प्राणी को न खिला सकें तो विकल्प के अभाव में अवशिष्ट भोजन को पृथ्वी में गाड़ देना चाहिए। जो पृथ्वी का अंग बनकर खाद बन जाता है एवं प्रदूषण भी नहीं होता।

भारतीय चिकित्सा पद्धति आयुर्वेद में भी पर्यावरण-संरक्षण एवं 3-आर विधि का (रिड्यूस, रीयूज, रीसाइकल) का प्रयोग सर्वदा से होता आ रहा है। पर्यावरण-संरक्षण से ही मानव निरोग रहते हुए दीर्घायु हो सकता है।

पश्येम शरदः शतम् । जीवेम शरदःशतम् । बुध्येम शरदः शतम् ।

रोहेम शरदः शतम् पूषेम शरदः शतम् । भवेम शरदः शतम् ।

भूषेम शरदः शतम् । भूयसीः शरदः शतात् । अथर्ववेद 19.67.1-8

हम सौ वर्ष देखें, सौ वर्ष जियें, सौ वर्ष ज्ञान लेते रहें, सौ वर्ष बढ़ते रहें हम सौ वर्ष पुष्ट होते रहें, हम सौ वर्ष अच्छी तरह से रहें, सौ वर्ष से अधिक जियें। यह तभी सम्भव है जब 3-आर विधि का प्रयोग कर वातावरण को शुद्ध रखा जाये और उसमें किसी प्रकार का प्रदूषण न हो।





Indian sages have always been traditionally conscious of environment protection. There are many instances of this in the Vedas, Vedanga, Brahman, Aaranyak, Upanishads, Darshan, Mahabharata, Puranetihas, Ramayana, Epics, Prose, Verse, Champu, Dramas, Folklores, Folkarts, Paintings, Civilizations, Sacraments, Indigenous cultures, Folk Literatures, Folklife etc. where references pertaining to reduce, reuse and recycle along with environment protection and also nature conservation is found. This is the philosophy of Indian life.

Public attitude has also been fully responsible for the 3-R (Reduce, Reuse and Recycle) and environment protection. In Indian culture, a spirit of Vasudhaiva kuṭumbakaṃ avaṃ yatraṃ viśvaṃ bhawatyeknīdaṃ~ has existed since ancient times. Indian culture considers the world as part of its family. Everyone is looked at as a friend and prayers are made for the welfare of the whole world.

Mitrasya mā cakṣuṣā sarvānai bhūtāni samīkṣantām/ Mitrasyāhaṃ cakṣuṣā sarvāṇaibhūtāni samīkṣe/ mitrasya cakṣuṣā samīkṣāmahe/ Yajurveda 36. 18

All look us like a friend, I look at everyone like a friend. We look each other like a friend.

The playwright Bhas has displayed Sita watering the trees.

tāvadīmān bālavṛkṣānudakapradānenānukrośayiṣyāmi/ Pratimānāṭakam 5

The height of environmental protection is visible in Kalidas's play 'Abhigyanshakuntalam'.





आवासन और शहरी
कार्य मंत्रालय
भारत सरकार



भारतीय मनीषी परम्परा सर्वदा से ही पर्यावरण-संरक्षण के प्रति सजग रही है। वेद, वेदांग, ब्राह्मण, आरण्यक, उपनिषद्, दर्शन, रामायण, महाभारत, महाकाव्य, गद्य, पद्य, चम्पू, नाटक, लोककथाओं, लोककलाओं, चित्रकलाओं, सभ्यताओं, संस्कारों, देशज संस्कृति, लोकसाहित्य, लोकजीवन आदि में इसके अनेक उदाहरण हैं, जो 3-आर (रिड्यूस, रीयूज, रीसाइकल), पर्यावरण-संरक्षण एवं प्रकृति-संरक्षण के सन्दर्भ में प्राप्त होते हैं। यही व्यापक भारतीय जीवन दर्शन है। लोकजीवन पूर्णरूप से 3-आर (रिड्यूस, रीयूज, रीसाइकल) एवं पर्यावरण-संरक्षण के प्रति सदा से सजग रहा है।

भारतीय संस्कृति में वसुधैव कुटुम्बकम् एवं यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्। की भावना भी प्राचीन काल से ही चली आ रही है। भारतीय संस्कृति विश्व को परिवार के अंग के रूप में मानती है। सबको मित्र के भाव से देखती है तथा सभी मित्र के भाव से देखें यह कामना करती है एवं सम्पूर्ण विश्व का कल्याण सोचती है।

मित्रस्य मा चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षन्ताम् ।

मित्रस्याहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे । मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे । यजुर्वेद 36.18

सभी हमें मित्र की दृष्टि से देखें, मैं सबको मित्र की दृष्टि से देखूँ। हम परस्पर मित्र की दृष्टि से देखें।

नाटककार भास ने सीता को वृक्षों का अभिसिंचन करते हुए प्रदर्शित किया है।

तावदीमान् बालवृक्षानुदकप्रदानेनानुक्रोशयिष्यामि । प्रतिमानाटकम् 5

कालिदास के अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक में पर्यावरण-संरक्षण की पराकाष्ठा दृष्टिगोचर होती है।





**Pātum na prathamam vyavasyati jalam yuṣmāsvapīteṣu yā
nādatte priyamaṇḍānā. api bhavatām snehena yā pallavama/
Ādye vaḥ kusumaprasūtisamaye yasyā bhavatyutsavaḥ
seyaṃ yāti śakuntalā patigṛhaṃ sarvaairanuḥjñāyatām// Abhijñānaśākuntalā 4/9**

Kashyap (Kanv) says to the trees of the forest that – Shakuntala, who did not drink water without irrigating you, who did not pluck your fresh leaves for making her ornaments due to love for you, who used to celebrate your flowering time as a festival, that Shakuntala is going to her husband's place, you all please give her your approval.

**Tana mālī para beciye kari saṃyama ko vāra/
dayā vṛkṣa sūkhe nahīṃ sīṃca kṣamā jaladhār//**

In Hindi literature, Kabir also said in some other form.

**Mātā bhūmiḥ putro. ahaṃ pṛthivyāḥ/ Atharvaveda 12/1/12
pṛthivī mātā dyausṣpitā/ Yajurveda 12. 10. 11**

vanaspatiṃ vana āsthāpayadhvaṃ ni ṣū dadhidhvamakhananta utsam // Rgveda 10.101.11

Earth, the land is our guardian, are our saviour like parents, and they should not be polluted. Trees should be planted, they should not be cut, and they protect the sources of water.

Ugrā yā viṣadūṣaṇāīḥ.....Oṣadhīḥ/ atharvaveda 8. 7. 10

Trees absorb carbon dioxide and reduces pollution and it is wished to always get them.





आवासन और शहरी
कार्य मंत्रालय
भारत सरकार



पातुं न प्रथमं व्यवस्यति जलं युष्मास्वपीतेषु या
नादत्ते प्रियमण्डनाऽपि भवतां स्नेहेन या पल्लवम् ।
आद्ये वः कुसुमप्रसूतिसमये यस्या भवत्युत्सवः
सेयं याति शकुन्तला पतिगृहं सर्वैरनुज्ञायताम् ॥ अभिज्ञानशाकुन्तलम् 4/9

काश्यप (कण्व) तपोवन के वृक्षों से कहते हैं कि – तुम्हें बिना जल पिलाए जो पहले जल नहीं पीती थी तुम्हारे प्रति प्रेम के कारण जो अलंकारों की प्रेमी होने पर भी तुम्हारे नये पत्ते नहीं तोड़ती थी तुम्हारे पुष्पोद्गम के समय जिसका उत्सव होता था वह शकुन्तला अब पतिगृह को जा रही है तुम सब अपनी स्वीकृति दो।

तन माली पर बेचिये करि संयम को वार। दया वृक्ष सूखे नहीं सींच क्षमा जलधार ॥
हिन्दी साहित्य में भी कबीर ने दूसरे रूप में कहा है।

माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः। अथर्ववेद 12/1/12

पृथिवी माता द्यौषिता। यजुर्वेद 12.10.11

वनस्पतिं वन आस्थापयध्वं नि भू दधिध्वम् अखनन्त उत्सम्। ऋग्वेद 10.101.11

दुलोक, भूमि हमारे रक्षक हैं पालक हैं ये माता-पिता के समान हैं इन्हें प्रदूषित नहीं करना चाहिए। वृक्षों को भी लगाना चाहिए इन्हें काटना नहीं चाहिए ये जल के स्रोतों की रक्षा करते हैं।

उग्रा या विषदूषणीः ..ओषधीः। अथर्ववेद 8.7.10

वृक्ष कार्बन डाइऑक्साइड को ग्रहण कर लेते हैं एवं प्रदूषण को कम करते हैं। कल्याणकारी अन्न एवं ओषधियाँ शान्ति प्रदान करती हैं इन्हे सदैव प्राप्त करने की कामना की गयी है।





**Vṛṣā ghrāvā vṛṣā mado vṛṣā somo ayaṃ sutaḥ /
vṛṣāyajño yaminvasi vṛṣā havaḥ // Ṛgveda 8.13.32**

The whole objects of nature are beneficial. Be it stones, leaves, flowers, fruits etc. whether we may treat them as despicable but it has natural powers. Everything has its own importance and all are necessary for the life.

**Patraṃ puṣpaṃ phalaṃ toyaṃ yo me bhaktyā prayaccati/
tadaḥ bhaktyupahṛtam aśnāmi prayatātmanaḥ// Śrimadbhagvatgīta 9.26**

Lord Krishna said to embrace leaves, flowers, fruits etc. in Srimad Bhagvad Geeta.



Hence, the 3-R is inherent in the lifestyle of Indians. Preserving this heritage, following the path explained by it, protecting the environment is the ultimate duty of all. All kind of welfare is possible only through environment protection. It is necessary to be aware of it and adopt and promote the 3-R (reduce, reuse, recycle) and zero waste management system. This will maximise the welfare of the world. The world will be free from pollution everyone will be healthy. For this, it is necessary to continuously promote efforts towards popularising the 3-R method to achieve these goals. Everyone can get pure air, clean water and a clean environment. Those entrepreneurs who makes new plans and works with complete devotion gets all the happiness of the world.



**Anvārbhethām anusaṃrbhethām etaṃ lokaṃ śraddadhānāḥ sacante/
Atharvaveda 6. 122. 3**

Sarve Bhavantu Sukhinah/ Sarve Santu Nirāmayāḥ//

Sarve Bhadrāṇi Paśyantū/ mā Kaścid-Duhkha-Bhāg-Bhavet//





आवासन और शहरी
कार्य मंत्रालय
भारत सरकार



वृषा ग्रावा वृषा मदो वृषा सोमो अयं सुतः। वृषा यज्ञो यमिन्वसि वृषा हवः। ऋग्वेद 8.13.32
प्रकृति की सम्पूर्ण वस्तुए उपयोगी हैं। पत्थर, पत्र, पुष्प, फलादि चाहे हम उसे तुच्छ समझें पर उसमें प्राकृतिक शक्ति होती है। सबका अपना महत्त्व है सब जीवन के लिए आव यक हैं।

पत्रं पुष्पं फलं तोयं यो मे भक्त्या प्रयच्छति।

तदहं भक्त्युपहृतमश्नामि प्रयतात्मनः।। श्रीमद्भगवद्गीता 9.26

श्रीकृष्ण ने भी गीता में पत्र, पुष्प, फल, जल, आदि को ग्रहण करने की बात कही है।

इस प्रकार भारतीय जीवनशैली में ही 3-आर पद्धति रची बसी थी। इस विरासत को सजोकर रखना इसके बताये मार्ग का अनुशरण करना, पर्यावरण का संरक्षण करना सबका परम कर्तव्य है। पर्यावरण-संरक्षण से ही समस्त प्रकार का कल्याण सम्भव है। आवश्यकता है इसके प्रति सजग होने की, 3-आर (रिड्यूस, रीयूज, रीसाइकल) एवं शून्य अपशिष्ट प्रबन्धन (जीरो वेस्ट मैनेजमेण्ट) पद्धति को अपनाने एवं बढ़ावा देने की तभी जगत् का कल्याण होगा। विश्व प्रदूषण मुक्त होगा सभी निरोग होंगे। इसके लिए अनवरत उद्यम करते रहना चाहिए। 3-आर विधि के प्रति स्वयं सजग होते हुए अन्य को भी सजग करना चाहिए जिससे लक्ष्य को प्राप्त किया जा सके। सभी को शुद्ध वायु, शुद्ध जल, एवं शुद्ध वातावरण प्राप्त हो सके। उद्यमी को नई योजना बनाने वाले को एवं समर्पण भाव से कार्य करने वाले को संसार का समस्त सुख प्राप्त होता है।

अन्वारभेथाम् अनुसंरभेथाम् एतं लोकं श्रद्दधानाः सचन्ते। अथर्ववेद 6.122.3

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः ।

सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद्दुःखभाग्भवेत्।।





References

1. Rigveda
2. Yajurveda
3. Atharveda
4. Kautilya Arthshastra
5. Ṛtusaṃhāra
6. Mahabharat
7. Nirukt
8. Padmapuran
9. Matsya purana
10. Satpath Brahmana
11. Atarassia Brahmana
12. Narayana Upanishad
13. Vishnu Puran
14. Srimad Bhagavad Gita
15. Maitrayani Samhita
16. Apastamba Dharmasutra
17. Mundaka Upanishad
18. Atari Upanishad
19. Samkhyakarika
20. Vedanta sara
21. Panchadasi
22. Pratima natakam
23. Abhigyan Shakuntalam
24. Valmiki Ramayan
25. Ramcharitmanas
26. Kutuj
27. Kamyani
28. Kabir ke Dohe
29. Giridhar ki Kundiliyan
30. Kabita bali
31. Rahim ke Dohe
32. Poem “Varsha” by Mahadevi Verma
33. Poem “ Himalaya ka Sandesh” by Ramdhari Singh Dinkar





सन्दर्भ-ग्रन्थ

1. ऋग्वेद
2. यजुर्वेद
3. अथर्ववेद
4. कौटिलीय अर्थशास्त्र
5. ऋतुसंहार
6. महाभारत
7. निरुक्त
8. पद्मपुराण
9. मत्स्यपुराण
10. शतपथ ब्राह्मण
11. ऐतरेय ब्राह्मण
12. नारायणोपनिषद्
13. विष्णुपुराण
14. श्रीमद्भगवद्गीता
15. मैत्रायणी संहिता
16. आपस्तम्ब धर्मसूत्र
17. मुण्डकोपनिषद्
18. ऐतरेयोपनिषद्
19. सांख्यकारिका
20. वेदान्तसार
21. पंचदशी
22. प्रतिमानाटकम्
23. अभिज्ञानशाकुन्तलम्
24. वाल्मीकि रामायण
25. रामचरित मानस
26. कुटज
27. कामायनी
28. कबीर के दोहे
29. गिरधर की कुंडलियाँ
30. कवितावली
31. रहीम के दोहे
32. वर्षा, महादेवी वर्मा
33. हिमालय का संदेश कविता,
रामधारी सिंह 'दिनकर'



Part 2

**Conservation in Indian
Living Demonstrated
through Illustration**

द्वितीय खण्ड

**भारतीय जीवन में संरक्षण :
चित्रों के माध्यम से प्रदर्शन**

1. Mera Ghar (My House)

Traditional Indian houses in rural areas used natural resources and waste materials abundantly. Rapid urbanization in India changed the scenario. Here is a brief explanation.



Sanjay a student of Kendriya Vidayala, Muradnagar, hails from a village in Bokaro.



Sanjay a student of Kendriya Vidayala, Muradnagar, hails from a village in Bokaro.



He says “My house is made of clay bricks and natural materials. We mix straw or rice paddy husks into it to build strength. We don’t use iron rods or cement. We use bamboo as thatches for ceilings and makes sloped roofs. Some people use strong branch of teak or Neem wood. Our houses are cool in summers and warm in winters. My grandmother makes beautiful pictures on its wall with natural colors”

1. मेरा घर

भारत के ग्रामीण क्षेत्रों के पारंपरिक घरों में प्राकृतिक संसाधनों और अपशिष्ट सामग्रियों का बहुतायत में प्रयोग होता है। भारत में तेजी से बढ़ते हुए शहरीकरण ने यह दृश्य पूरी तरह बदल दिया है।



संजय केंद्रीय विद्यालय, मुरादनगर, का एक छात्र है, जो बोकारो के एक गांव का रहने वाला है।



मेरी दादीमां इसकी दीवारों पर प्राकृतिक चट्टानों, फूलों और सब्जियों के रंगों के साथ सुन्दर चित्र बनाती हैं।



वह कहता है, "मेरा घर मिट्टी की ईंटों और प्राकृतिक सामग्री से बना है। हम इसमें घास और धान की भूसी को उसकी ताकत बढ़ाने के लिये मिलाते हैं। हम लोहे की छड़ों या सीमेंट का उपयोग नहीं करते। हम छत के छप्पर के लिये बांस का प्रयोग करते हैं और छतें ढाल में बनाते हैं। कुछ लोग इसके लिये सागवान या नीम की मजबूत शाखाओं का भी प्रयोग करते हैं। हमारे घर गर्मियों में ठंडे और सर्दियों में गर्म रहते हैं। मेरी दादीमां इनकी दीवारों पर प्राकृतिक रंगों के साथ सुन्दर चित्र बनाती हैं।"

2. All round use of Coconut (our Kalpataru)



Our divine tree (Kalpataru) is the coconut tree which can fulfill so many wishes.



We are skilled to make thatches of our houses from the leaves. Nutritious coconut water is loved by all and by tourists.



We make brooms and fans from the midribs of coconut. Coconut fiber husk is used for making carpets, ropes, door mats, mattresses, vehicle seat covers, brushes, bristles and so on.

Matured coconut is used to make oil. Coconut shell powder is a good mosquito repellent. Goldsmiths also use coconut shell as charcoal. Coconut timber is used in houses for window frames and trusses. Further, coir pith is composted to make manure for indoor plants as well as for horticulture crops”.

It is a joy to see self-reliant villagers and we salute “KALPATARU” for its blessing!

2. नारियल (हमारा कल्पतरु) का उपयोग



हमारे पवित्र पेड़ (कल्पतरु) नारियल के पेड़ जो बहुत सारी इच्छाएं पूरी करते हैं।



हम पत्तों से अपने घरों के छप्पर बनाने में कुशल हैं। स्वादिष्ट नारियल का पानी हमें और सभी सैलानियों को प्रिय है।



हम नारियल के बीच के हिस्से के साथ झाड़ू और पंखे बनाते हैं। नारियल की भूसी के फाइबर (तंतूओं) का प्रयोग हम कालीन, रस्सियों, दरवाजों के मैट्स, गद्दे, वाहनों के सीट कवर, ब्रुश, ब्रिस्टल आदि बनाने में करते हैं।

पके हुए नारियल का प्रयोग तेल बनाने के लिये किया जाता है। नारियल के खोल का पाउडर एक अच्छा मच्छर निरोधक है। सुनार भी नारियल के खोल का प्रयोग चारकोल बनाने के लिये करते हैं। नारियल की लकड़ी का प्रयोग घरों में खिड़कियों और टेक बनाने के लिये किया जाता है। इसके अतिरिक्त, जूट के गूदे/सार को कम्पोस्ट बना कर घरेलु पौधों और बागबानी की फसलों की खाद बनाने के लिये काम में लाया जाता है।

हमारे आत्म-निर्भर ग्रामीणों को देखकर हमें आनन्द की अनुभूति होती है और हम "कल्पतरु" को अपना आर्शीवाद देने के लिये नमन करते हैं।

3. Use of food waste, cow dung, and biomass

Our village folk live close to nature!



Kaushika, a visiting Brahmin, stood before the door of a village house to collect alms. He saw the housewife busy collecting the leftover food and mixing it with hay and grass to feed her cattle.



After that she collected cow dung and cleaned the area and mixed dung with hay and made dung cake for fuel.



Kaushika became impatient. The woman said “Please, don’t be angry. I am serving my cattle and mother earth. My cattle gives milk and fuel to us. They are blessings of mother earth”. The woman asked him to visit old lady Sumata to learn more.

3. अपशिष्ट भोजन, गाय के गोबर, और जैव ईंधन का प्रयोग

हमारे गाँव के लोग प्रकृति के निकट रहते हैं।



कौशिक, भ्रमण करने वाले ब्राह्मण हैं, जो घर के दरवाजे के सामने दान प्राप्त करने के लिये खड़े हैं। वह देखते हैं कि एक गृहिणी बचे हुए भोजन को एकत्र करने में व्यस्त है और उसे घासफूस में पशुओं को खिलाने के लिये मिला रही है।



उसके बाद वह गाय के गोबर को उठाकर स्थान को साफ कर देती है और ईंधन के लिये उपले बनाने के लिये गोबर में घासफूस मिलाती है।



कौशिक अब व्याकुल हो जाते हैं। महिला उनसे कहती है "कृपया, क्रोध मत करें। मैं अपने पशुओं और धरती माँ को खाना दे रही हूँ। मेरे पशु हमें दूध और ईंधन देते हैं। वे धरती माँ के वरदान हैं।" वह महिला उनसे कहती है कि यदि आप इस विषय में ज्यादा जानना चाहते हैं तो एक वरिष्ठ महिला सुमाता से भेंट करें।



Kaushika reached Sumata's place and saw her mopping the floor with dung. Mother, I have come to learn from you

Kaushika now happily exclaimed! I have learnt that we all are an integral part of nature and should deeply respect mother earth that supports our sustainable way of life.



"Listen! revered ascetic!, I will talk to you in the evening, until then you have to help me in digging a pit for manure production" Kaushika filled the pit with dried leaves and other food leftovers. He was exhausted.



कौशिक सुमाता के पास जाते हैं और देखते हैं कि वह भूमि पर गोबर के उपले बना रही होती है। माँ, मैं आपसे कुछ सीखने के लिये आया हूँ।

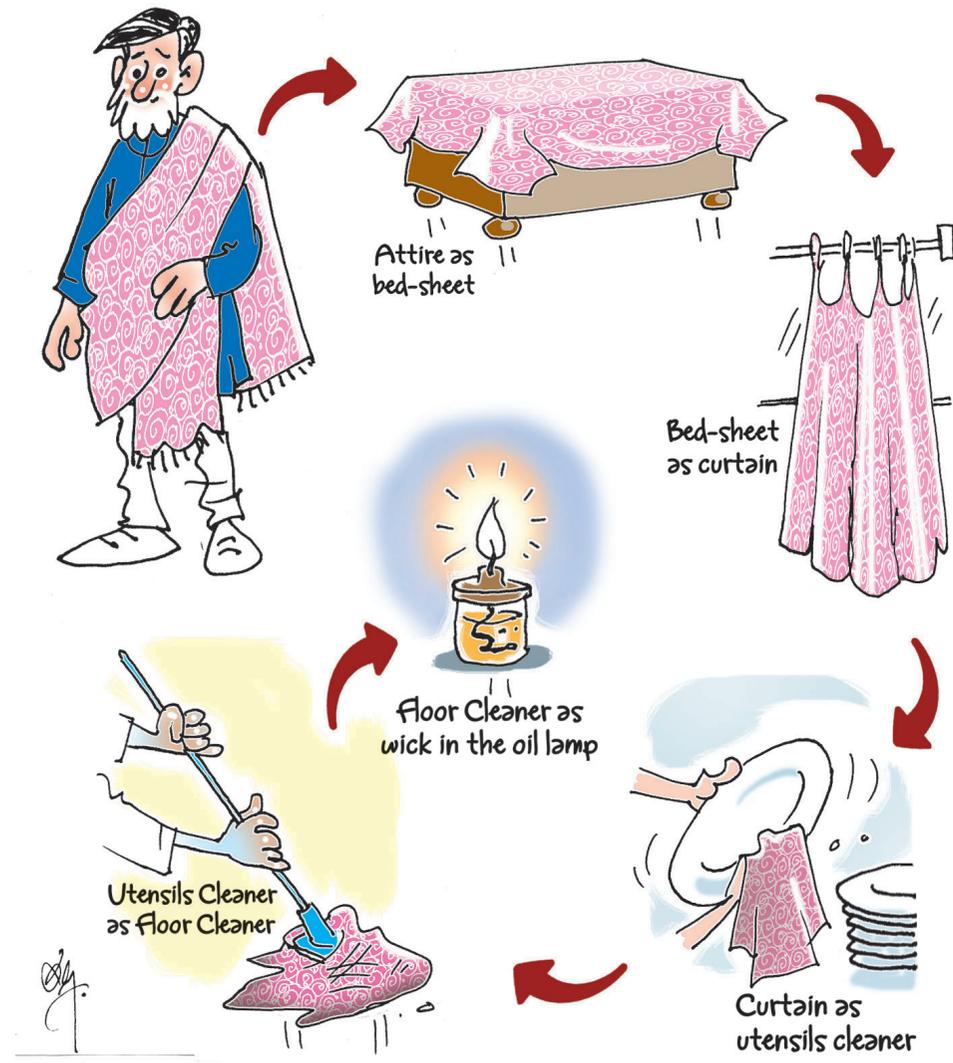
कौशिक अब खुशी से चिल्लाकर कहता है! अब मैं सीख गया हूँ कि हम सब प्रकृति के अभिन्न अंग हैं और हमें अपनी उस धरती माँ का सम्मान करना चाहिए जो लंबे समय तक हमारे जीने का मार्ग प्रशस्त करती है।



“हे श्रद्धेय साधु! मैं आपसे शाम को बात करूँगी, तब तक आप खाद उत्पन्न करने के लिये इस गड्ढे को भरने में मेरी मदद करें।” कौशिक गड्ढे को सूखी पत्तियों और अन्य बचे हुए भोजन से भर देते हैं। वह काफी थक जाते हैं।

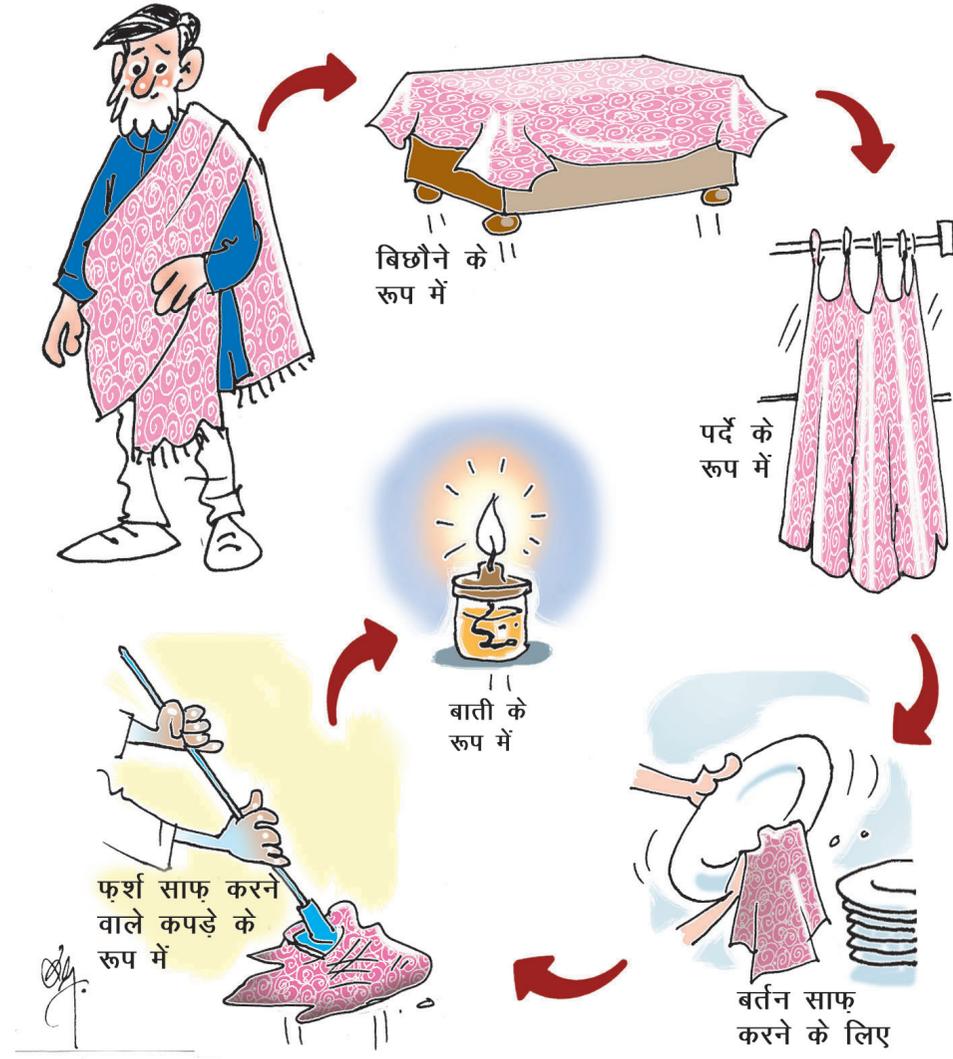
4. Eco-Consumerism in Lord Buddha's Life

Lord Buddha's disciples were seeking wisdom. Lord Buddha asked the disciples to observe the life cycle of an attire and illustrated the beauty of durable service to humanity.



4. भगवान बुद्ध के जीवन में पर्यावरण-उपभोक्तावाद

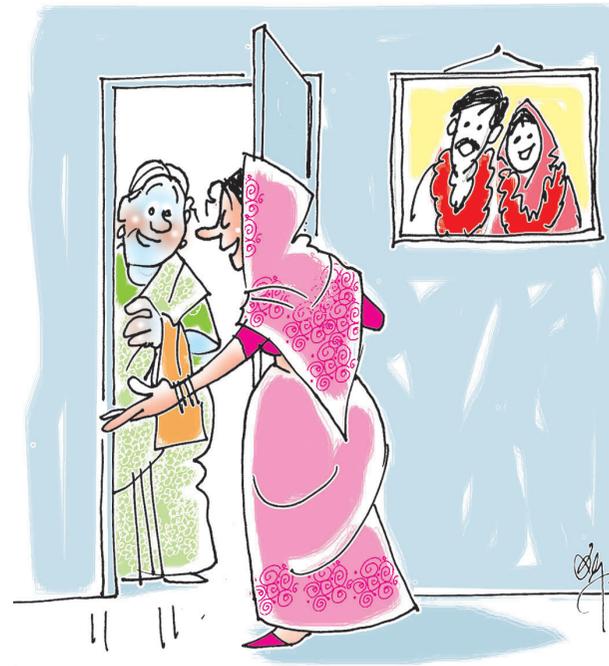
भगवान बुद्ध का शिष्य ज्ञान की तलाश में है। भगवान बुद्ध उससे कहते हैं कि एक पोशाक के जीवन चक्र का अवलोकन करे और मानवता की चिरस्थायी सेवा का सुंदर चित्रण करे।



5. Reuse of old clothes



Pratibha remains lost in her thoughts in the seventh month of her pregnancy. Suddenly she heard a knock on the the door.



It was the landlady.“

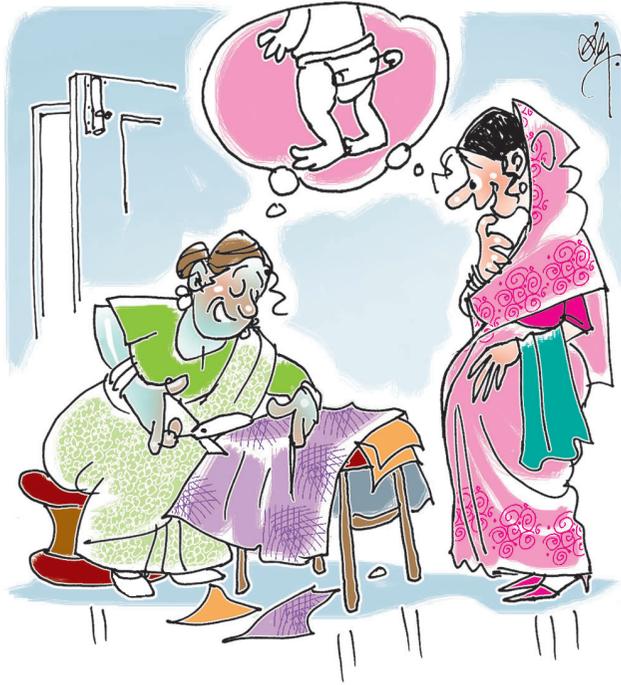
5. पुराने कपड़ों का पुनर्प्रयोग



प्रतिभा अपने गर्भावस्था के सातवें महीने में अपने विचारों में खोई हुई है। अचानक उसे दरवाजे पर दस्तक सुनाई देती है।



यह उसकी मकान मालकिन थी।



Pratibha calls her mother in-law to visit. Tell me daughter, what do I bring for you.

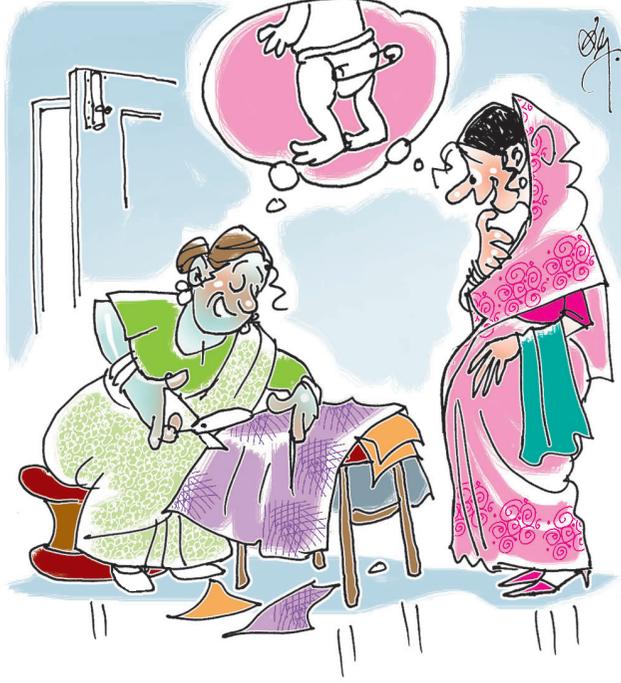
Nothing Mom. Some old clean cotton clothes and we will manage. I know how to reuse them.

The lady asked “Daughter, What do you think all day?” Nothing, auntie. Just thinking about how should I manage with simple means and support my child.

“Don’t worry. Today I have brought something for you. This is my old cotton saree. “

“Pratibha, I have cleaned it perfectly.” Then, auntie cut it into four pieces and made bedding for the baby. Pratibha brought two faded old dupattas and old bed sheet too. Auntie made layers of all these old clothes. She asked for big size needle and thread. She started stitching.

Now I am going to show you how you can make baby nappies. All the clothes and bed sheets and head cover of baby were made out of sheer love.



प्रतिभा ने अपनी सासू मां को आने के लिये कहा। बताओ बेटी, मैं तुम्हारे लिये क्या लेकर आऊं।

कुछ नहीं मां जी। सिर्फ कुछ पुराने साफ सूती के कपड़े ले आएं और बाकी हम प्रबंध कर लेंगे। मुझे मालूम है उनका पुनर्प्रयोग किस प्रकार से करना है।

वह महिला उससे पूछती है, "बेटी, तुम सारा दिन क्या सोचती रहती हो?"
कुछ नहीं, आंटी, मैं बस यही सोच रही थी कि कैसे मैं अपने घर में सीमित साधनों के साथ बच्चे को संभाल पाऊंगी।

परेशान मत हो। आज मैं तुम्हारे लिये कुछ लेकर आई हूँ। यह मेरी सूती की पुरानी साड़ी है।
प्रतिभा, मैंने इसे अच्छी तरह साफ कर दिया है। तब, आंटी कहती हैं कि इसे चार हिस्सों में काट कर शिशु के बिस्तर की चादर बना लो। प्रतिभा अपने फीके पड़ गये पुराने 2 दुप्पटे भी ले आईं। आंटी ने सभी पुराने कपड़ों की परतें बना लीं। उन्होंने एक बड़ी सुई और धागा मांगा। और सिलाई करने में जुट गईं।

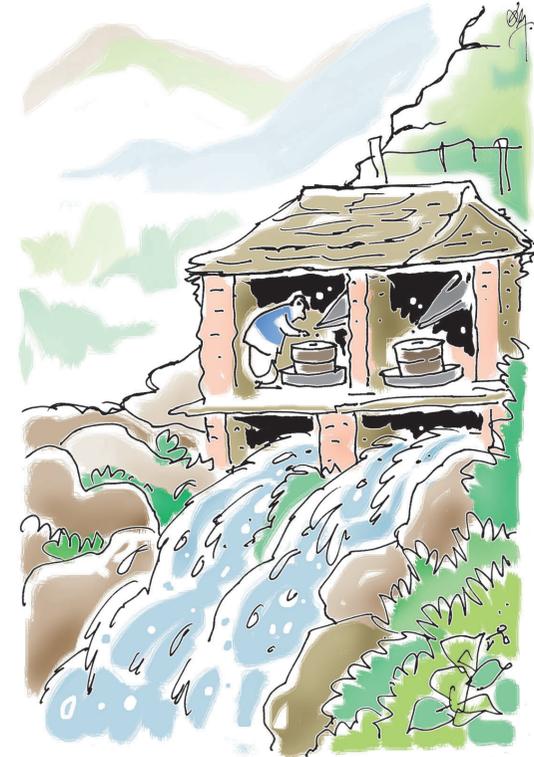
अब मैं तुम्हें दिखाऊंगी कि कैसे तुम शिशु की लंगोटी बना सकती हो। इस प्रकार सभी कपड़ों से शिशु के लिये बिछौने, लंगोटी और सिर की टोपियां नितांत प्यार के साथ बन गयीं।

6. Meri Chakki (My Grinding Mill)

Today we have adopted electric power mills to make flour from wheat & cereals. However, in old times, we used to have our own eco-friendly grinding mills running on renewable energy. Here are its features.



Everyone was talking about their own places. Kalyani in her story told all about manual chakki to grind dal, wheat, and rice grains. She said, “Left over from Chakki was used for feeding animals.”



Sumitra narrated another story. She was from Chamba, Himachal Pradesh. She said “We are having a chakki which runs with the energy from flowing water. She said at our place there are many water streams. Sometimes we dig a channel along the stream to carry the water up to the mill-house. Chakki runs on hydro-energy. We don’t require electricity for milling wheat or any other grain.

6. मेरी चक्की

आज हमने गेहूं और अनाज पीसने के लिये बिजली से चलने वाली चक्की लगाई है। हालांकि, पुराने जमाने में, हम अपने स्वयं की पर्यावरण-अनुकूल पीसने की चक्की जो अक्षय ऊर्जा से संचालित थी उसका उपयोग करते थे। यहां उसकी कुछ विशेषताएं बताई गई हैं।



हर कोई अपने स्थान के बारे में बात करता है। कल्याणी अपनी कहानी में हाथ से चलाने वाली चक्की के बारे में बताती है जिसमें दालें, गेहूं, और चावल को पीसा जाता था। वह बताती हैं, "चक्की में बचे हुए शेष भाग को पशुओं को डाल दिया जाता था।"

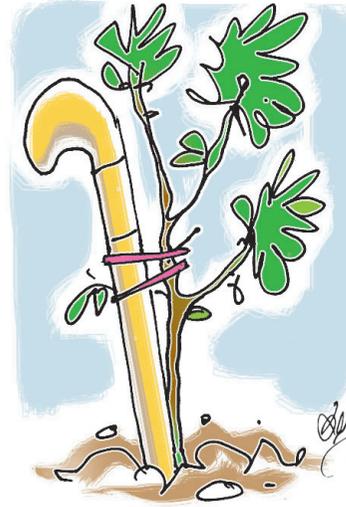


सुमित्रा एक अन्य कहानी सुनाती है। वह चम्बा, हिमाचल प्रदेश में रहती थी। वह कहती है हमारे पास एक चक्की थी जो बहते हुए पानी की ऊर्जा से चलती थी। वह कहती है कि हमारे क्षेत्र में पानी के कई चश्में हैं। कभी-कभी हम चश्में के साथ नाली खोद दिया करते थे ताकि पानी चक्की घर तक लाया जा सके। चक्की हाइड्रो-ऊर्जा से संचालित होती है। हमें गेहूं और अन्य अनाज को पीसने के लिये बिजली की आवश्यकता नहीं पड़ती।

7. Reuse of Toys



In most of our homes, in some corner, packed inside cardboard boxes, we have toys that our children have outgrown playing. These toys can be provided to people who have yet to procure toys to bring joy to their children.



Ravi's father used Ravi's old unused hockey stick to support tall plants in their garden.



Seema in her class has been assigned to make some useful product from waste materials present in her household. She has carved a pen stand from her sister's old toy.

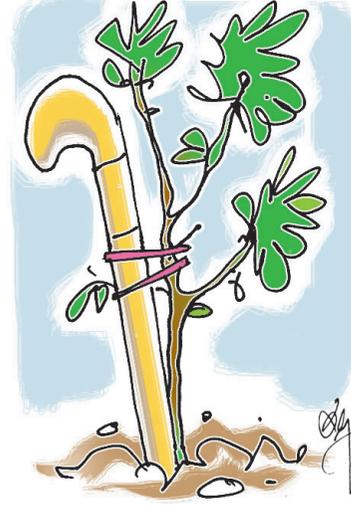


The old toys that may have broken or become dysfunctional are sold to plastic recyclers for making plastic products to be used for various purposes.

7. खिलौनों का पुनर्प्रयोग



हमारे अधिकांश घरों के कुछ कोनों में गत्ते के डिब्बे रखे मिल जाते हैं, जिनके भीतर, हमारे बच्चों के जब वह छोटे थे उस समय के खिलौने पैक कर रखे गये हैं। यह खिलौने उन लोगों को दिये जा सकते हैं जो अपने बच्चों को बाज़ार से खिलौने खरीदकर उन्हें आनंदित होते हुए देखना चाहते हैं।



रवि के पिताजी रवि की पुरानी बेकार पड़ी हॉकी स्टिक के साथ उनके बगीचे के लंबे पौधों को सहारा देने के लिये उसका प्रयोग करते हैं।



सीमा को उसकी कक्षा में उसके घर में उपलब्ध अपशिष्ट सामग्री के साथ कुछ उपयोगी उत्पाद बनाने का कार्य दिया जाता है। वह अपनी बहन के पुराने खिलौने से एक नक्काशीदार पेन स्टैंड बनाती है।



पुराना खिलौना जो टूट गया है या अब चलता नहीं है उसे विविध प्रयोजनों के लिये प्रयोग करने वाले अन्य प्लास्टिक उत्पाद बनाने वाले प्लास्टिक रिसाईकल (पुनर्चक्रण) करने वाले को बेचा जा सकता है।

8. Reuse of Tyres



Rashmi is enjoying the monsoon season with makeshift swing made out of unused tyres that are strung on the trees in her garden.



Old unused tyres have been also filled with soil and used as improvised pots for growing plants.



Rubber tube from tyres can serve as arm rests and bases for chairs at home.



Villagers find convenience watering the crops utilizing rubber bags made out of used tyre tubes.

8. टायरों का पुनर्प्रयोग (रियूज)



रशमी प्रयोग में न आने वाले बेकार पड़े टायर जो उसके बगीचे के पेड़ों पर टंगे हुए थे उनसे कामचलाऊ झूला बनाकर बरसात के मौसम का आनंद उठा रही है।



पुराने बेकार पड़े टायरों में मिट्टी भरकर उन्हें एक बढ़ने वाले पौधे का गमला बनाकर प्रयोग किया जाता है।



टायर का रबड़ ट्यूब घर पर कुर्सियों का हथ्था एवं कुर्सियों के तल के रूप में काम कर सकता है।



ग्रामीण पुराने टायर की ट्यूबों के रबड़ का थैला बनाकर फसलों की सिंचाई में काफी सुविधा महसूस करते हैं।

9. Rock Garden of Chandigarh



Wow! Figurnines and dance troupes made out of bangles and electric wires. Thanks to Shri Nek Chand we have a unique garden made of motley materials.



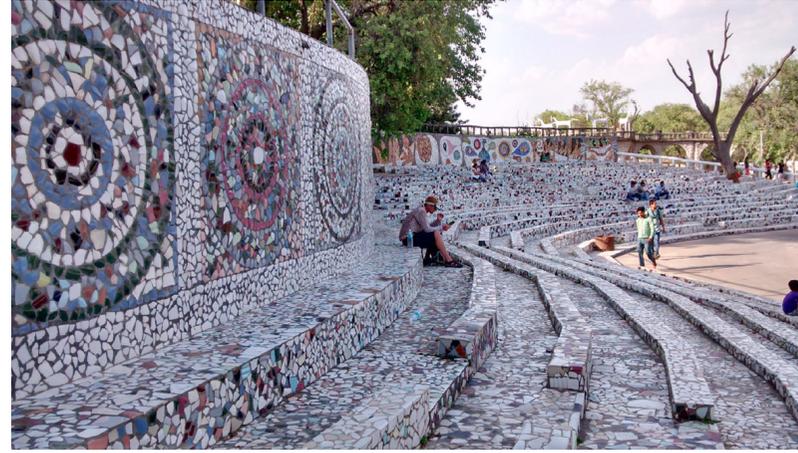
Included here is an entire colourful play arena with seating arrangement made out of cemented pieces of ceramics. Delightful spaces for children.



9. चण्डीगढ़ का रॉक उद्यान (गार्डन)



वाह! चूड़ियों और बिजली की तारों को मिलाकर बनाई गई लघुमूर्तियां और नृत्य मंडलियां। श्री. नेक चंद जी को बहुत धन्यवाद जिन्होंने विविध अनुपयोगी सामग्रियों के मिश्रण से एक अनूठे बगीचे का निर्माण किया है।



यहां पर एक रंग बिरंगा खेल का मैदान जिसमें बैठने की व्यवस्था के लिये सिरामिक के टुकड़ों को सीमेंट लगा कर निर्मित किया गया है। बच्चों के लिये यह बहुत ही आकर्षक स्थल है।





Adding to the ambience is created waterfall and over bridge which taps water from Sukna lake.

Tourists find the attractive garden made from recycled materials a charming landmark.



पानी का यह झरना और ओवर ब्रिज जिस पर सुकना झील से पानी लाया गया है दृश्य की सुंदरता में चार चाँद लगा देता है।
सैलानी इस रिसाईकल सामग्री से निर्मित आकर्षक बगीचे को देखकर मंत्र मुग्ध हो जाते हैं।

10. Biogas from Foodwaste



Biogas from food waste, leafy waste
(Food and leafy waste are used to
make biogas which is
used for cooking food)



Biogas installation for horticulture waste



Biogas installation for
wastes from canteen,
houses

10. अपशिष्ट भोजन से निर्मित जैविक ईंधन (बायोगैस)



अपशिष्ट भोजन से निर्मित बायोगैस (जैविक ईंधन), पत्तों का अपशिष्ट भोजन और पत्तों के अपशिष्ट का बायोगैस बनाने के लिये प्रयोग जिससे भोजन पकाने के लिये प्रयोग किया जाता है।



बागवानी के अपशिष्ट के लिये बायोगैस संयंत्र स्थापना



कैंटीन, घरों के अपशिष्ट के लिये बायोगैस संयंत्र स्थापना

